Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(सूरत बक़रह:184)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ   نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ   وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 18

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

03 शवाल 1443 हिज्री कमरी, 05 हिजरत 1401 हिज्री शम्सी, 05 मई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

सहरी खाने में बरकत है

(1923) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सहरी खाया करो क्योंकि सहरी में बरकत है।

भूल से खाने पीने वाला अपना रोज़ा पूरा करे

(1933) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यदि कोई भूल से खाए पीए तो चाहिए कि वह अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि अल्लाह ने ही उसे खिलाया और पिलाया।

यात्रा में रोज़ा कोई नेकी नहीं

(1946) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक यात्रा में थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक भीड़ देखी और एक व्यक्ति को जिस पर साया किया हुआ था, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यह क्या है? तो लोगों ने कहा : एक रोज़ेदार है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यात्रा में रोज़ा कोई नेकी नहीं।

(सही बुख़ारी भाग 3 किताब अल् सोम, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

इन्सान को अनिवार्य है कि स्वयं पर आप दया न करे बल्कि ऐसा बने कि ख़ुदा तआला उसके नफ़्स पर दया करे
क्योंकि इन्सान की दया उसके नफ़्स पर उसके वास्ते जहन्नुम है और ख़ुदा तआला की दया जन्नत है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह एक सूक्ष्म बी बात है कि यदि किसी व्यक्ति पर (अपने नफ़्स की सुस्ती के कारण से) रोज़ा कष्टदायक है और वह अपने ख़्याल में समझता है कि मैं बीमार हूँ और मेरी सेहत ऐसी है कि यदि एक वक़्त न खाऊं तो अमुक फ़ुलां रोग होंगे और यह होगा और वह होगा तो ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा तआला की नेअमत को ख़ुद अपने ऊपर कष्टदायक समझता है कब तक इस सवाब का अधिकारी होगा। हाँ वे व्यक्ति जिसका दिल इस बात से ख़ुश है कि रमज़ान आ गया और मैं इस की प्रतीक्षा करता था कि आए और रोज़ा रखूं और फिर वह बीमारी के कारण रोज़ा नहीं रख सका तो वह आसमान पर रोज़े से वंचित नहीं है। इस दुनिया में बहुत लोग बहाना बनाते हैं और वे ख़्याल करते हैं कि हम जिस तरह दुनिया वालों को धोखा दे लेते हैं वैसे ही ख़ुदा को धोखा देते हैं। बहाना बनाने वाले अपने वजूद से आप मसला तराश करते हैं और तकल्लुफ़ात (बहाने) शामिल कर के इन मसायल को सही ठहराते हैं। लेकिन ख़ुदा तआला के नज़दीक वे सही नहीं। तकल्लुफ़ात का अध्याय बहुत बड़ा है यदि इन्सान चाहे तो इस (तकल्लुफ़) की दृष्टि से सारी उम्र बैठ कर नमाज़ पढ़ता रहे और रमज़ान के रोज़े बिल्कुल न रखे परन्तु ख़ुदा उस की नीयत और इरादा को जानता है जो सिदक़ और इख़्लास रखता है। ख़ुदा तआला जानता है कि उसके दिल में दर्द है और ख़ुदा तआला उसे सवाब से ज़्यादा भी देता है क्योंकि दर्द-ए-दिल एक काबिल-ए-क़दर वस्तु है। बहाने बनाने वाला इन्सान तावीलों पर तकिया करते हैं लेकिन ख़ुदा तआला के नज़दीक यह तकिया कोई वस्तु नहीं। जब मैंने छ: महीने रोज़े रखे थे तो एक दफ़ा एक दल नबियों का मुझे (स्वप्न में) मिला और उन्होंने कहा कि तू ने क्यों स्वयं को इस क़दर कठिनाई में डाला हुआ है, इस से बाहर निकल। इसी तरह जब इन्सान अपने आप को ख़ुदा के वास्ते मुश्किल में डालता है तो वह ख़ुद माँ बाप की तरह रहम करके उसे कहता है कि तू क्यों मशक़्क़त में पड़ा हुआ है।

ख़ुदा तआला की दया

ये लोग हैं कि तकल्लुफ़ से अपने आपको मशक़्क़त से वंचित रखते हैं इस लिए ख़ुदा उनको दूसरी मुश्किलों में डालता है और निकालता नहीं और दूसरे जो स्वयं मुश्किल में पड़ते हैं उनको वह स्वयं निकालता है। इन्सान के लिए अनिवार्य है कि अपने नफ़्स पर आप दया न करे बल्कि ऐसा बने कि ख़ुदा तआला उसके नफ़्स पर दया करे क्योंकि इन्सान की दया उसके नफ़्स पर उस के वास्ते जहन्नुम है और ख़ुदा तआला की दया जन्नत है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्सा पर ग़ौर करो कि जो आग में गिरना चाहते हैं तो उनको ख़ुदा तआला आग से बचाता है। और जो ख़ुद आग से बचना चाहते हैं वे आग में डाले जाते हैं। (मल् फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 564 मुद्रित 2003 क़ादियान)

रोज़ों के नतीजा में अल्लाह तआला अपने इल्हाम से नवाज़ता है ,
सच्चे स्वप्न और कशूफ़-ए-सहीहा का दरवाज़ा खोल देता है और परोक्ष की बातों से अवगत करता है

रोज़ों का आध्यात्मिक रंग में एक यह भी लाभ है कि इस के नतीजा में अल्लाह तआला का इल्हाम इन्सानी दिल पर नाज़िल होता है और इस की कशफ़ी निगाह में ज़्यादा जिला और नूर पैदा हो जाता है वास्तव में यदि ग़ौर से काम लिया जाए तो मालूम होगा कि अल्लाह तआला की कोई आदत तो नहीं परन्तु इस में आदत से एक समानता अवश्य पाई जाती है। इन्सान की तरह उसकी आँखें तो नहीं परन्तु वह देखने वाला अवश्य है उस के कान नहीं परन्तु वह सुनने वाला अवश्य है इसी तरह जबकि उस में कोई आदत नहीं पाई जाती परन्तु उस में यह बात आवश्यक पाई जाती है कि जब वह एक काम करता है तो उसे दोहराता है। इन्सान में भी यह बात पाई जाती है। कुछ लोगों को हाथ या पैर हिलाने की आदत होती है और वे उन्हें बार-बार हिलाते हैं और आदत के यही अर्थ होते हैं कि कोई बात बार-बार की जाए और यह बात अल्लाह तआला में भी है कि जब वे एक विशेष अवसर पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता है तो उस अवसर पर बार बार फ़ज़ल करता है अल्लाह तआला की इस सिफ़त के अधीन चूँकि रमज़ान के महीना में क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल हुआ शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई (भाग-4)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने अपने आने का उद्देश्य यह बताया है कि मैं इस लिए आया हूँ ता लोग अपने पैदा करने वाले रब को पहचानें। ख़ुदा से सम्बन्ध क़ायम हो और दूसरे ये कि मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करें। प्रत्येक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने वाला हों।

एक मेंबर पार्लियामेंट ने प्रश्न किया कि जमाअत के बारे में मज़ालिम का ज्ञान केवल एक हफ़्ता पहले हुआ है। क्या आपकी जमाअत में कोई ऐसा निज़ाम है जो यह इत्तिला पहुँचाता रहे।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत में ऐसा निज़ाम उपस्थित है। हियूमन राईट्स की एक कमेटी बनी हुई है जो ये सारा काम और सम्पर्क करती है। इस कमेटी के सदस्य जिनेवा (स्विटज़रलैंड) मे सम्बंधित हुक्काम से सम्पर्क में रहते हैं। वहां जाकर UNHCR से निरंतर मीटिंग करते हैं। इसी तरह मलेशीया, थाईलैंड और श्रीलंका और दूसरे देशों में असाईलम सीकरज़ के हवाले से UNHCR के दफ़ातिर से सम्पर्क रहता है और हम विभिन्न देशों में हुकूमती विभागों को पर्सीकियूशन के हवाला से इन्फार्म करते हैं और निरंतर सबको रिपोर्टस प्रदान की जाती हैं।

इस अवसर पर सदर जमाअत आयरलैंड ने बताया कि निरंतर ई-मेल के माध्यम से पर्सीकियूशन के बारे में हुक्काम को बाख़बर रखा जाता है।

पार्लियामेंट के सदस्यों के साथ मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 12 बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा। इसके बाद प्रोटोकोल ऑफीसर ने आकर यह ऐलान किया कि अब ख़लीफतुल मसीह का एक दूसरा प्रोग्राम है। जहां ख़लीफतुल मसीह तशरीफ़ ले जाएंगे। इस लिए प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर को इस असैंबली हाल में ले जाया गया। जहां नैशनल पार्लियामेंट के इज्लास की कार्यवाही जारी थी। हुज़ूर अनवर VIP गैलरी में तशरीफ़ ले गए और लगभग बीस मिनट तक इस इज्लास की कार्यवाही देखी।

12 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर इस हाल से बाहर पधारे तो प्रोटोकोल ऑफीसर ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दरख़ास्त की कि हुज़ूर वज़ीटर बुक पर कुछ तहरीर फ़रमाएं।

इस लिए वज़ीटर बुक पर हुज़ूर अनवर ने नाम लिख कर दस्तख़त की

एक दूसरे हाल में ऐवान बालासनेट का इज्लास जारी था प्रोटोकाल ऑफीसर केपटं Jhon Flaherty हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को विशेष प्रबन्ध के तहत इस हाल में ले गए। जहां हुज़ूर अनवर ने दस मिनट तक सनेट के इज्लास की कार्यवाही देखी।

इसके बाद पार्लियामेंट की इंतिज़ामीया की ओर से चाय और अन्य लवाज़मात के साथ तवाज़ो की गई। इस मध्य हुज़ूर अनवर ने प्रोटोकोल ऑफीसर को प्रेम पूर्वक दावत दी कि गालवे में मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर आएं।

प्रोग्राम के अनुसार 12 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को पूरे सरकारी सम्मान के साथ पार्लियामेंट हाऊस से विदा किया गया।

पुलिस के चार मोटर साईकलों ने वापसी पर भी हुज़ूर अनवर के क़ाफ़ला को Escort किया और साथ साथ ट्रैफ़िक रोकते हुए समस्त रास्तों को क्लीयर किया।

एक बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की होटल स तशरीफ़ आवरी हुई।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार से गालवे Galway शहर के लिए प्रस्थान था। तीन बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे और इजतिमाई दुआ करवाई और क़ाफ़ला गालवे शहर की ओर रवाना हुआ।

गालवे शहर, डबलिन से 120 मील पश्चिम की ओर साहिल समुंद्र पर स्थित है और आयरलैंड का चौथा बड़ा शहर है। इस शहर की दरयाफ़त तेरहवीं सदी ईसवी में हुई। 68 हज़ार लोग यहां आबाद हैं इस शहर को आयरलैंड के पश्चिमी किनारे पर आबाद होने के कारण से यूरोप का आख़िरी शहर भी कहा जा सकता है।

लगभग दो घंटे यात्रा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की गालवे में तशरीफ़ आवरी हुई। गालवे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ और सदस्य क़ाफ़ला के क़ियाम का प्रबन्ध होटल Clayton में किया गया था। जूंही हुज़ूर अनवर की गाड़ी होटल के बाहरी सेहन में पहुंची। जमाअत के लोग पुरुष और महिलाओं ने अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा। बच्चों और बच्चियों ने ग्रुप की सूरत में इस्तिक़बालिया गीत प्रस्तुत किए।

गालवे जमाअत के सदर आदरणीय डाक्टर मामून रशीद साहब ने अपनी मज्लिस-ए-आमला के सदस्य के साथ हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। आदरणीय इब्राहीम नोंन साहब मुबल्लिग़ गालवे ने भी हाथ मिलाने का सौभाग्य का सौभाग्य प्राप्त किया।

सदर लजना इमाल्लाह गालवे आदरणीया शाज़ीया रिज़वान साहिबा ने हज़रत बेग़म साहिबा को स्वागत कहा। अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए गालवे जमाअत के सदस्य अतिरिक्त Cork, Limerick, AthloneऔरDublinकी जमाअतों से भी लोगों और विभिन्न फ़ैमिलीज़ अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए पहुंची थीं। उनमें से कुछ फ़ैमिलीज़ ऐसी भी थीं कि उन्होंने पहली बार हुज़ूर अनवर को अपने इतना क़रीब देखा था। आज का यह दिन उनके लिए बहुत सारी बरकतें और सआदतें लेकर आया था। प्रत्येक छोटा बड़ा इन मुबारक क्षण से फ़ैज़याब हो रहा था।

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रिय जहांगीर रशीद ने फूल प्रस्तुत किए और प्रिय समेरा ख़ान ने हज़रत बेग़म साहिबा की सेवा में फूल प्रस्तुत किए।

हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामु अलैकुम कहा और होटल में अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

गालवे (आयरलैंड) में जमाअत की पहली बनने वाली मस्जिद मर्यम की दूरी इस होटल से एक किलोमीटर से कम है।

आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मर्यम पधार कर नमाज़ मग़रिब, ईशा जमा करके पढ़ाई। समस्त जमाअतों से आने वाले लोगों, महिलाओं ने अपने आक़ा के साथ इस नई मस्जिद में पहली नमाज़ अदा करने का सौभाग्य पाया। उनमें से कुछ ऐसे लोग भी थे जिनकी जीवन में अपने प्यारे आक़ा के साथ में यह पहली नमाज़ थी। बाज़ों की आँखें आंसूओं से तर थीं। प्रत्येक अपने अपने रंग में फ़ैज़याब हो रहा था।

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सदर साहब जमाअत आयरलैंड से मस्जिद के हवाला से कुछ मामलों दरयाफ़त फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ वापस होटल पधारे। 25 सितम्बर 2014 शुक्रवार के दिन

सुबह 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद मर्यम" में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने रिहायशी अपार्टमेंट में पधारे। हुज़ूर अनवर के यहां गालवे में क़ियाम के इस डबलिन Cork, Lucan, Drogheda और Athlone की जमाअतों से

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हम एक ऐसे स्थान पर खड़े हो गए थे कि यदि अल्लाह हम पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा एहसान ना फ़रमाता तो क़रीब था कि हम हलाक हो जाते

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अज़ीम ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जब तक़रीबन सारे अरब ने इर्तेदाद इख़्तियार कर लिया और कुछ लोगों ने पूर्णता इस्लाम से दूरी इख़्तियार कर ली

और कुछ ने ज़कात की अदायगी से इन्कार किया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सब के ख़िलाफ़ क़िताल किया, इतिहास की पुस्तकों में और जीवनी में ऐसे समस्त लोगों के लिए मुर्तदीन का शब्द इस्तिमाल हुआ है, जिसकी वजह से बाद में आने वाले जीवनी लेख़क और उल्मा को ग़लती लगी या वे ग़लत तालीम फैलाने का बायस बने कि मानो मुर्तद की सज़ा क़तल है

और इसी लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समस्त मुर्तदीन के विरुद्ध जिहाद का ऐलान किया और ऐसे सब लोगों को क़तल करवा दिया सिवाए इस के कि वह पुनः इस्लाम स्वीकार कर लें

क़ुरआन-ए-करीम की आयात, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस, क़ुरआन -ए- करीम की तफ़सीर की पुस्तकें और इस्लाम के इतिहास के तथ्य, तथा इर्शादात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा ए अहमदियत की रोशनी में इस्लाम में क़तल-ए मुर्तद की सज़ा के शीर्षक पर विस्तारपूर्वक बेहस

सम्मानीय मुहम्मद बशीर शाद साहिब रिटायर्ड मुरब्बी (अमरीका), सम्मानीय राना मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब स्यालकोट और सम्मानीय डाक्टर महमूद अहमद ख़्वाजा साहब इस्लामाबाद कावर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने के फ़ित्नों का वर्णन हो रहा था। इस बारे में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम अपनी तसनीफ़ सिर्रुल खिलाफा में बयान फ़रमाते हैं कि

"अरब के आम और ख़ास लोग मुर्तद हो गए और बनू तै और बनू असद तलीहा के हाथ पर एकत्र हो गए और बनू ग़त्फ़ान मुर्तद हो गए और बनू हवाज़न मुर्तद हुए और उन्होंने ज़कात देना रोक दी तथा बनू सुलैम के सरदार मुर्तद हो गए और इसी प्रकार हर स्थान पर शेष लोगों का भी यही हाल था।" (पृष्ठ-65) इब्ने असीर ने अपनी तारीख़ में लिखा है – "कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वर्गवास हुआ और आपके निधन की खबर मक्का और वहां के गवर्नर उताब बिन उसैद को पहुंची तो उताब छुप गया और मक्का कांप उठा और निकट था कि उसके निवासी मुर्तद हो जाते।"

(भाग-1, पृष्ठ-134)

और अतिरिक्त लिखा है – अरब मुर्तद हो गए, हर कबीले में से जन सामान्य या जन विशेष, और फूट प्रकट हो गयी तथा यहूदियों और ईसाइयों ने अपनी गर्दनें उठा-उठा कर देखना आरंभ कर दिया और मुसलमानों की अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन और अपनी कमी और दुश्मनों की अधिकता के कारण ऐसी हालत हो गयी थी जैसी वर्षा की रात में भेड़-बकरियों की होती है। इस पर लोगों ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु से कहा कि ये लोग केवल उसामा की सेना को ही मुसलमानों की सेना समझते हैं और जैसा कि आप देख रहे हैं अरबों ने आप से विद्रोह कर दिया है। अत: उचित नहीं है कि आप मुसलमानों की इस जमाअत को अपने से अलग कर लें। इस पर (हज़रत) अबू बक्र रज़ियल्लाहु ने फ़रमाया- उस हस्ती की क़सम जिस के क़ब्ज़ाए-क़ुदरत में मेरी जान है। यदि मुझे इस बात का विश्वास भी हो जाए कि दरिन्दे मुझे उचक लेंगे तब भी मैं रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार उसामा की सेना को अवश्य भेजूंगा। जो फैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, मैं उसे निरस्त नहीं कर सकता। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात् हम एक ऐसे स्थान पर खड़े हो गए थे कि यदि अल्लाह हम पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु के द्वारा उपकार न करता तो करीब था कि हम तबाह हो जाते। आप रज़ियल्लाहु ने हमें इस बात पर इकट्ठा किया कि हम बिन्ते मख़ाज़ (एक वर्षीय ऊंटनी) और बिन्ते लबून (दो वर्षीय ऊंटनी) की (ज़कात की वुसूली के लिए) युद्ध करें और यह कि हम अरब बस्तियों को खा जाएं और हम अल्लाह की इबादत करते चले जाएं, यहां तक कि मौत हमें आ जाए। (सिर्रुल ख़िलाफ़: उर्दू अनुवाद, पृष्ठ नंबर 189-188 हाशिया, प्रकाशन नज़ारत इशाअत)

यह जो बेहस चल रही है इस में कुछ ग़लत-फ़हमियाँ भी पैदा हो सकती हैं और यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि क्या इस्लाम में इर्तेदाद की सज़ा क़तल है? इस बारे में मुख़्तसर बयान कर देता हूँ।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जब तक़रीबन सारे अरब ने इर्तेदाद इख़्तियार कर लिया और कुछ लोगों ने पूर्णता इस्लाम से दूरी इख़्तियार कर ली और कुछ ने ज़कात की अदायगी से इन्कार किया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सब के ख़िलाफ़ क़िताल किया। इतिहास की पुस्तकों में और सीरत में ऐसे समस्त लोगों के लिए मुर्तद का शब्द इस्तिमाल हुआ है। जिसकी वजह से बाद में आने वाले जीवनी लेख़क और उल्मा को ग़लती लगी या वे ग़लत तालीम फैलाने का कारण बने कि मानो मुर्तद की सज़ा क़तल है और इसी लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समस्त मुर्तदीन के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान किया और ऐसे सब लोगों को क़तल करवा दिया सिवाए इसके कि वे दुबारा इस्लाम क़बूल कर लें और यूं इन इतिहासकारों और जीवनी लेख़कों ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को अक़ीदा ख़त्म नबुव्वत का मुहाफ़िज़ और उसके हीरो के तौर पर पेश किया। हालाँकि हक़ीक़त यह है कि ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के इस दौर में ख़त्म-ए-नबुव्वत और अक़ीदा ख़त्म नबुव्वत के इस तरह के तहफ़्फ़ुज़ की कोई सोच या नज़रिया मौजूद ही नहीं था और न ही उन लोगों के ख़िलाफ़ इसलिए तलवार उठाई गई थी कि खत्म-ए-नबुव्वत को कोई ख़तरा था या मुर्तद की सज़ा चूँकि क़तल थी इसलिए उनको क़तल किया जाए। इस की तफ़सील तो आगे वर्णन होगी और इस बारे में तो वर्णन होगा कि उनके ख़िलाफ़ ऐलान जंग क्यों किया गया? लेकिन इस से पहले यह बताना आवश्यक है कि क्या क़ुरआन-ए-करीम ने या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुर्तद की सज़ा क़तल वर्णन की है या कोई और सज़ा भी निर्धारित की है?

इस्लामी इस्तिलाह में मुर्तद उसको कहा जाता है जो दीन-ए-इस्लाम से इन्हिराफ़

कर जाए और इस्लाम क़बूल करने के बाद फिर इस्लाम के दायरे से निकल जाए। जब हम कुरान-ए-करीम को देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने असंख्य जगहों पर मुर्तद होने वालों का बाक़ायदा वर्णन तो फ़रमाया है लेकिन उनके लिए क़तल या किसी भी किस्म की दुनियावी सज़ा देने का वर्णन नहीं किया। इसलिए कुछ आयात उदाहरण के तौर पर पेश की जाती हैं। पहली आयत यह है कि

وَ مَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَ هُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ۔

(अल् बक़र: 218)

अर्थात और तुम में से जो भी अपने दीन से पीछे हो जाए फिर इस हाल में मरे कि वह काफ़िर हो तो यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया में भी नष्ट हो गए और आख़िरत में भी और यही वे लोग हैं जो आग वाले हैं। इस में वे बहुत लंबा अरसा रहने वाले हैं।

इस आयत में वर्णन हुआ है कि तुम में से जो कोई मुर्तद हो जाए और आख़िर कार उसी कुफ़्र की हालत में मर जाए। इस से ख़ूब वाज़िह हो रहा है कि मुर्तद की सज़ा क़तल नहीं थी क्योंकि यदि उस की सज़ा कतल होती तो यह वर्णन नहीं होता कि ऐसा मुर्तद आख़िर कार कुफ़्र की हालत में मर जाए।

फिर एक जगह फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (अल् मायदा : 55)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम में से जो अपने दीन से मुर्तद हो जाए तो अवश्य अल्लाह उस के बदले एक ऐसी क़ौम ले आएगा जिससे वे मुहब्बत करता हो और वे उस से मुहब्बत करते हों। मोमिनों पर वे बहुत मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर बहुत सख़्त। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी निंदा करने वाले की निंदा का कोई ख़ौफ़ नहीं रखते होंगे। यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह इस को जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बहुत वुसअत अता करने वाला और दाइमी इलम रखने वाला है।

इस जगह भी मुर्तद होने वालों का वर्णन फ़रमाते हुए मोमिनों को यह ख़ुश-ख़बरी तो दी गई कि ऐसे लोगों के बदले में अल्लाह तआला क़ौमों की कौमें अता फ़रमाएगा लेकिन कहीं यह वर्णन नहीं फ़रमाया कि मुर्तद होने वालों को क़तल कर दो या अमुक अमुक सज़ा दो।

फिर एक और आयत जो कि हर किस्म के शकूक-ओ-शुबहात और सवालात को ख़त्म कर देने वाली है वह सूरत अल् निसा की यह आयत है फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا (अल् निसा : 138)

निसंदेह वे लोग जो ईमान लाए फिर इन्कार कर दिया। फिर ईमान लाए फिर इन्कार कर दिया। फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए। अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें माफ़ कर दे और उन्हें रास्ते की हिदायत दे।

अत: बड़ी वाज़ेह नफ़ी है इस में कि मुर्तद की सज़ा क़तल नहीं है और यही तशरीह हमारे लिटरेचर में भी की जाती है और मुफ़स्सेरीन ने भी इस की वज़ाहत की है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने उसकी थोड़ी सी वज़ाहत अपने तर्जुमतुल क़ुरआन में इस तरह फ़रमाई है कि "यह आयत इस अक़ीदा की नफ़ी करती है कि मुर्तद की सज़ा क़तल है। इसलिए फ़रमाया यदि कोई मुर्तद हो जाए, फिर ईमान ले आए, फिर मुर्तद हो जाए, फिर ईमान ले आए तो उसका फ़ैसला अल्लाह तआला के सपुर्द है और यदि कुफ़्र की हालत में मरेगा तो लाज़िमी तौर पर जहन्नुमी होगा। यदि मुर्तद की सज़ा क़तल होती तो उसके बार-बार ईमान लाने और कुफ़्र करने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता था।'' (क़ुरआन-ए-करीम उर्दू अनुवाद अज़ हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद रहमहुल्लाह, पृष्ठ 158 हाशिया)

इसके इलावा क़ुरआन-ए-करीम में कुछ और आयात हैं जो उसूली तौर पर क़तल मुर्तद की नफ़ी करने वाली हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا (अल् कहफ़ : 30)

और कह दे कि हक़ वही है जो तुम्हारे रब की तरफ़ से हो। अत: जो चाहे वह ईमान ले आए और जो चाहे वह इन्कार कर दे। निसंदेह हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेरे में ले लेंगी और यदि वे पानी माँगेंगे तो उन्हें ऐसा पानी दिया जाएगा जो पिघले हुए ताँबे की तरह होगा जो उन के चेहरों को झुलस देगा। बहुत ही बुरा मशरूब है और बहुत ही बुरी आरामगाह है।

दीन में किसी किस्म के जबर की नफ़ी करते हुए फ़रमाया : لَاۤ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۟ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (अल् बक़र : 257) दीन में कोई जबर नहीं। निसंदेह हिदायत गुमराही से खुल कर नुमायां हो चुकी। अत: जो कोई शैतान का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान लाए तो निसंदेह उसने एक ऐसे मज़बूत कड़े को पकड़ लिया जिसका टूटना सम्भव नहीं। और अल्लाह बहुत सुनने वाला और दाइमी इलम रखने वाला है।

कुरान-ए-करीम की कुछ आयात बतौर उदाहरण पेश की गई हैं जिनमें दीन के नाम पर किसी भी किस्म की सख़्ती, जबर और सज़ा की नफ़ी की गई है और मुर्तद होने वालों का वर्णन करके किसी भी किस्म की सज़ा का वर्णन नहीं करना हमारी राहनुमाई करता है कि मुर्तद होने वाले के लिए शरीअत-ए-इस्लामी कोई जिस्मानी और दुनियावी सज़ा निर्धारित नहीं करती।

इसी क़ुरआन-ए-करीम की तालीम और नज़रिया की मज़ीद समर्थन इस से भी होती है कि क़ुरआन-ए-करीम में जगह जगह मुनाफ़क़ीन का वर्णन मौजूद है और मुनाफ़क़ीन की बुराइयां इस क़दर ज़ोर से वर्णन की गई हैं कि कुफ़्फ़ार की बुराइयों का भी इस तरह वर्णन नहीं। इन लोगों को फ़ासिक़ भी कहा गया है। उनको काफ़िर भी कहा गया है। उनके बारे में इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र इख़्तियार करने का वर्णन किया गया है लेकिन ऐसे किसी भी मुनाफ़िक़ के लिए न तो किसी किस्म की सज़ा का वर्णन किया गया है और तारीख-ए-इस्लाम गवाह है कि न ही किसी मुनाफ़िक़ को उनके नफ़ाक़ की बिना पर कोई सज़ा दी गई। इसलिए मुनाफ़क़ीन का वर्णन करते हुए क़ुरआनकहता है : قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ○ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ ۙ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ○ (तौबा : 53 - 54)

तू कह दे कि चाहे तुम ख़ुशी से ख़र्च करो चाहे कराहत के साथ कदापि तुमसे क़बूल नहीं किया जाएगा। निसंदेह तुम एक बदकिर्दार क़ौम हो। और उन्हें किसी चीज़ ने इस बात से वंचित नहीं किया कि उनसे उनके अम्वाल क़बूल किए जाएं सिवाए इसके कि वे अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार कर बैठे थे तथा यह कि वे नमाज़ के क़रीब नहीं आते थे परन्तु सख़्त सुस्ती की हालत में। और ख़र्च भी नहीं करते थे परन्तु ऐसी हालत में कि वे सख़्त कराहत महसूस करते थे।

इस आयत-ए-करीमा में मुनाफ़क़ीन को फ़ासिक़ क़रार दिया और अल्लाह और उसके रसूल का कुफ़्र करने वाला क़रार दिया। फिर उनके कुफ़्र की शिद्दत का वर्णन मज़ीद इस आयत में वर्णन किया कि यह

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (अल् तौबा : 74)

वे अल्लाह की कसमें खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा हालाँकि वे निसंदेह कुफ़्र का कलिमा कह चुके हैं जबकि वे इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गए। और वे ऐसे पुख़्ता इरादे रखते थे जिन्हें वे पा नहीं सके। और उन्होंने मोमिनों से मित्रता नहीं रखी परन्तु केवल इस वजह से कि अल्लाह और उसके रसूल ने उनको अपने फ़ज़ल से मालामाल कर दिया। अत: यदि वे तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा। हाँ यदि वे फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब देगा और उन के लिए सारी ज़मीन में न कोई मित्र होगा और न मददगार।

इसी तरह सूरत तौबा आयत : 66 में फ़रमाया। तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर बन गए हो لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ कोई बहाना न बनाओं। لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ कोई बहाना न बनाओं निसंदेह तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो।

इसी तरह मुनाफ़ेक़ीन के विषय में पूरी सूरत अल् मुनाफ़ेक़ून नाज़िल हुई। इस में फ़रमाया اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ○ (अल् मुनाफ़ेकून : 3-4)उन्होंने अपनी कसमो को ढाल बना रखा है। अत: वे अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। निसंदेह बहुत बुरा है जो वे अमल करते हैं।

यह इसलिए है कि वे ईमान लाए फिर इन्कार कर दिया तो उनके दिलों पर मौहर कर दी गई अत: वे समझ नहीं रहे। यहां भी उन लोगों के ईमान लाने और इस के बाद फिर कुफ्र इख़तियार करने का वर्णन किया है लेकिन किसी किस्म की कोई सज़ा निर्धारित नहीं की गई और न ही दी गई।

उद्देश्य इसी तरह की बहुत सी आयात हैं जिनमें ऐसे लोगों का वर्णन है कि जो ईमान लाते हैं और फिर ऐलानिया या अमली तौर पर कुफ्र इख़तियार करते हैं। इन लोगों को फ़ासिक़ और काफ़िर और मुर्तद तो कहा गया है लेकिन उनके लिए क़तल इत्यादि की कोई सज़ा निर्धारित नहीं की।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुर्तद के बारे में क्या फ़रमाते हैं। क़ुरआन-ए-करीम के बाद अब इस बारे में भी हम देखते हैं कि जिस मुबारक वजूद पर क़ुरआन-ए-करीम उतारा गया, जो كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ का तसदीक़ करने वाला वजूद था, जिसने अपने अमल से क़ुरआन-ए-करीम के आदेश नाफ़िज़ करते हुए अपना उदाहरण पेश किया इस मुबारक हस्ती ने मुर्तद के हवाले से क्या फ़रमाया।

सही बुख़ारी में निर्मलिखित घटनाएँ इस बात का निर्णय कर देती है कि मुर्तद के लिए महिज़ इर्तेदाद के जुर्म में कोई शरई हद निर्धारित नहीं थी। इस हदीस के शब्द ये हैं हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक आराबी नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और इस्लाम क़बूल करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बैअत की। अगले दिन आराबी को मदीना में बुख़ार हो गया वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा कि मेरी बैअत मुझे वापस दे दें। फिर वह दुबारा आया और कहने लगा कि मेरी बैअत मुझे वापस दे दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन मर्तबा इन्कार फ़रमाया। उस को जवाब नहीं दिया। फिर वह आराबी मदीना से चला गया। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मदीना एक भट्टी की तरह है वह मेल को निकाल देता है और असल पवित्र चीज़ को ख़ालिस कर देता है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल بَابٌ: الْمَدِينَةُ تَنْفِي الْخَبَثَ, हदीस 1883)

हज़रत मौलाना शेर अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी तसनीफ़ "क़तले मुर्तद और इस्लाम" (ये उनकी एक किताब थी। ये किताब जो थी ये हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की निगरानी में तैयार की गई थी इस) में ये हदीस दर्ज की है और इसके बाद लिखते हैं कि इस व्यक्ति का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास बार-बार आना भी ज़ाहिर करता है कि मुर्तद के लिए क़तल की सज़ा निर्धारित नहीं थी अन्यथा कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास नहीं आता बल्कि कोशिश करता कि बिना सूचना दिए चुपके से निकल जाए और किसी पर ज़ाहिर नहीं करता कि वह इर्तेदाद इख़तियार करना चाहता है। फिर लिखते हैं कि हमें बताया जाता है कि मुर्तद की सज़ा क़तल इर्तेदाद को रोकने के लिए शरीयत इस्लाम में निर्धारित की गई है और इस का उद्देश्य यह है कि लोगों को इस्लाम पर रहने के लिए मजबूर किया जाए। यदि ये बात सच्च है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क्यों उस व्यक्ति को मुतनब्बा नहीं किया जो बार-बार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आ रहा था और क्यों यह नहीं कह दिया कि याद रखो कि इस्लाम में इर्तेदाद की सज़ा क़तल है। यदि तुम इर्तेदाद इख़तियार करोगे तो तुम्हें क़तल किया जाएगा और जबकि वे बार-बार इर्तेदाद का इरादा ज़ाहिर करता था और ख़ौफ़ था कि वह मुर्तद हो कर चला जाएगा। फिर ऐसी सूरत में क्यों इस पर पहरा निर्धारित नहीं किया गयाता कि यदि वह मुर्तद हो कर जाने लगे तो उस को पकड़ लिया जाए और इस पर शरई हद जारी की जाए। क्यों सहाबा ने इस को यह नहीं कहा कि मियां यदि जान की ख़ैर चाहते हो तो इर्तेदाद का नाम न लो क्योंकि इस शहर में तो यह क़ायदा जारी है कि जो व्यक्ति इस्लाम ला कर फिर इर्तेदाद इख़तियार करता है इस को फ़ौरन क़तल कर दिया जाता है। अत: इस आराबी का बार-बार इर्तेदाद का इज़हार करना और इस का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास बार-बार जाना और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उस को इर्तेदाद के नतीजा से सचेत न करना और न सहाबा को इस के क़तल का हुक्म सुनाना और आख़िर कार उस का बग़ैर किसी किस्म के झगड़े के मदीना से निकल जाना ये सब उमूर साफ़ तौर पर इस अमर के स्पष्ट गवाह हैं कि इस्लाम में मुर्तद के लिए कोई शरई हद निर्धारित नहीं थी। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उसके निकल जाने पर एक तरह की ख़ुशी का इज़हार करना और फ़रमाना कि मदीना एक भट्टी की तरह है जो मैल कुचैल को पाकीज़ा जोहर से जुदा कर देता है साफ़ ज़ाहिर करता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस उसूल के मुख़ालिफ़ थे कि किसी को जबर से इस्लाम पर रखा जाए और लोगों को जबरी ज़राए इख़तियार कर के इर्तेदाद से रोका जाए बल्कि यदि नापाक इन्सान मुस्लमानों की जमाअत से अलग हो जाता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस पर नाख़ुश नहीं होते थे और आप यह कोशिश नहीं फ़रमाते थे कि उस को इस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जबरन इस्लाम में रखा जाए बल्कि ऐसे व्यक्ति का चला जाना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नज़दीक मानो ख़स कम जहाँ पाक (किसी चीज़ या आदमी का होना या न होना दोनों बराबर हों) के तसदीक़ करने वाला था। यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह उसूल होता कि जो व्यक्ति एक दफ़ा इस्लाम में दाख़िल हो जाए उस को हर सम्भव द्वारा से इस्लाम में रहने के लिए मजबूर किया जाए और यदि वह किसी तरह भी न माने तो उस को क़तल किया जाए ताकि उस की मिसाल दूसरों के लिए इबरत हो तो चाहिए था कि आप इस आराबी के जाने पर ख़फ़ा होते और सहाबा को डाँटते कि तुमने उसको क्यों जाने दिया? क्यों उसको पकड़ कर क़तल की धमकी नहीं दी और चाहिए था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा को हुक्म देते कि दौड़ो और जहां हो उस ख़बीस को पकड़ लाओ ता उस को क़तल की सज़ा दी जाए परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसा न किया बल्कि दूसरे शब्दों में यह फ़रमाया कि अच्छा हुआ वह चला गया। वह इस काबिल नहीं था कि मुस्लमानों में रहे। ख़ुदा तआला ने ख़ुद उस को अपने हाथ से हमसे जुदा कर दिया। उद्देश्य उस आराबी की मिसाल एक क़तई और यक़ीनी सबूत इस अमर का है कि मुर्तद के लिए कोई शरई सज़ा निर्धारित नहीं थी और मुस्लमानों में क़तअन यह तरीक़ जारी नहीं था कि वे हर एक मुर्तद को केवल उस के इर्तेदाद की वजह से क़तल कर देते।

(उद्धरित क़तले मुर्तद और इस्लाम अज़ मौलवी शेर अली साहिब ,पृष्ठ 109 से 111 मुद्रित 1925 ई.)

दूसरा सबूत इस बात का कि मुर्तद के लिए कोई शरई हद निर्धारित नहीं थी वह शराइत हैं जिनके साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्थान हुदैबिया में मुशरेकीन मक्का के साथ सुलह की। सुलह हुदैबिया की हदीस में लिखा है जो बरा बिन आज़िब से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया के दिन मुशरेकीन के साथ तीन बातों पर सुलह की। पहली शर्त यह थी कि यदि मुशरेकीन में से कोई व्यक्ति मुस्लमान हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाए तो आप उसको मुशरेकीन की तरफ़ वापस कर देंगे। दूसरी शर्त यह थी कि यदि मुस्लमानों में से कोई व्यक्ति मुर्तद हो कर मुशरेकीन की तरफ़ चला जाए तो मुशरेकीन उसको आपकी तरफ़ वापस नहीं करेंगे। (सही अल् बुख़ारी, किताब अस्सुलाह, بَابُ الصُّلْحِ مَعَ الْمُشْرِكِينَ , हदीस 2700)

इस सुलह नामा की दूसरी शर्त से साफ़ तौर पर ज़ाहिर होता है कि मुर्तद के लिए कोई शरई हद निर्धारित नहीं थी क्योंकि यदि इर्तेदाद के लिए शरीयत इस्लाम में यह सज़ा निर्धारित होती कि उस को क़तल किया जाए तो शरई हद के मुआमला में भी कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुशरेकीन की बात क़बूल नहीं फ़रमाते। इसके इलावा भी ऐसे कई वाक़ियात हैं जिनसे बख़ूबी वाज़िह हो जाता है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र समय में चंद लोगों ने दीन इस्लाम से इर्तेदाद इख़तियार किया लेकिन महिज़ इर्तेदाद की वजह से उनसे कोई झगड़ा नहीं किया गया उस समय तक कि उन्होंने युद्ध और राज-विद्रोह जैसे कार्यों का इर्तिकाब नहीं किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन-ए-मजीद की एक और आयत से भी इस मसले को यूं वाज़िह फ़रमाया है कि "وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ" फ़रमाया कि इस "में इस तरफ़ इशारा किया गया है कि तलवार की बजाय तब्लीग़ से काम लेना ही एक भूतपूर्व उसूल है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी इसी उसूल को इख़तियार किया था। और उनके ज़माना के लोगों को भी ख़ुदा तआला की तरफ़ से यही इरशाद हुआ था कि हमारे इस रसूल का काम केवल बात पहुंचा देना है तलवार से मनवाना नहीं और यही सारे क़ुरआन का ख़ुलासा है कि दलील के साथ बात मनवाना मज़हबी लोगों का काम होता है।

ज़ोर से मनवाना मज़हबी लोगों का काम नहीं। परन्तु अफ़सोस है कि अब तक दुनिया इस मसला को नहीं समझी बल्कि स्वयं मुस्लमानों में भी क़तल-ए-मुर्तद को जायज़ समझा है। "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि" हालाँकि किसी का अक़ीदा झूठ हो या सच्च, अक़ीदा रखने वाला उसे बहरहाल

वैसा ही सच्चा समझता है जैसे एक मुस्लमान अपने मज़हब को सच्चा समझता है। ईसाईयत झूठी सही परन्तु प्रश्न तो यह है कि दुनिया के अधिकतर ईसाई ईसाइयत को क्या समझता है। वे निसंदेह उसे सच्चा समझते हैं। हिंदू धर्म झूठा है लेकिन प्रश्न तो यह है कि दुनिया के अधिकतर हिंदू अपने मज़हब को क्या समझते हैं। वे निसंदेह उसे सच्चा समझते हैं। यहूदी धर्म निसंदेह इस वक़्त सच्चा नहीं। लेकिन प्रश्न तो यह है कि यहूदियों के अधिकतर लोग यहूदियत को क्या समझते हैं। वे निसंदेह उसे सच्चा समझते हैं। अत: यदि इस बात पर किसी को क़तल करना जायज़ है, कि मैं समझता हूँ मेरा धर्म सच्चा है दूसरे का नहीं।" केवल यही बात यदि है "तो फिर एक ईसाई को यह क्यों अधिकार प्राप्त नहीं कि वे जिस मुस्लमान को चाहे क़तल कर दे। एक हिंदू को क्यों अधिकार प्राप्त नहीं कि वह जबरन दूसरों को हिंदू बना ले या उन्हें मार डाले। चीन में कनफ़्रीशस धर्म के अनुयाइयों को यह क्यों हक़ नहीं कि वे ज़बरदस्ती लोगों को अपने मज़हब में शामिल कर लें। फ़िलपाइन में जहां अब भी पंद्रह बीस हज़ार मुस्लमान है। "उस ज़माने में जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया। अब तो ज़्यादा हैं। "ईसाइयों को क्यों अधिकार प्राप्त नहीं कि वे मुस्लमानों को जबरन ईसाई बना लें। अमरीका को क्यों अधिकार प्राप्त नहीं कि वे जबरन इन मुस्लमानों को जो उसके मुल्क में रहते हैं ईसाई बना ले। रूस को क्यों अधिकार प्राप्त नहीं कि वे जबरन सबको ईसाई बना ले या जबरन सबको कमयूनिसट बना ले। अगर मुस्लमान दूसरों को जबरन अपने अक़ीदा पर ला सकते हैं तो वैसा ही अधिकार बोद्धिक रूप से दूसरों को भी हासिल है लेकिन क्या इस अधिकार को जारी करके दुनिया में कभी अमन क़ायम रह सकता है।

क्या इस अधिकार को जारी कर के तुम अपने बेटे को भी कह सकते हो कि यह मसला ठीक है या पत्नी को भी कह सकते हो कि यह मसला ठीक है कि ईसाइयों का हक़ है कि वे मुस्लमानों को ज़बरदस्ती ईसाई बना लें। मुस्लमानों का हक़ है कि वे ईसाइयों को ज़बरदस्ती मुस्लमान बना लें। ईरान वालों का हक़ है कि वे सब हनफ़ियों को ज़बरदस्ती शीया बना लें और हनफ़ियों का हक़ है कि वे सबको ज़बरदस्ती सुन्नी बना लें। उद्देश्य यह ऐसी अक़्ल के विपरीत बात है कि कोई इन्सान उस को एक मिनट के लिए भी स्वीकार नहीं कर सकता। पिछले नबियों की क़ौमों ने जब भी ख़ुदाई हिदायत को मानने से इन्कार किया तो ख़ुदा तआला ने उन्हें सम्बोधित करते हुए यही फ़रमाया कि اَنُلۡزِمُکُمُوۡهَا وَ اَنۡتُمۡ لَهَا کٰرِهُوۡنَ (हूद : 29) अर्थात यदि तुम ख़ुद हिदायत लेना पसंद नहीं करते तो हम जबरन तुम्हें हिदायत नहीं दे सकते लेकिन अफ़सोस कि मौजूदा ज़माने में मुस्लमानों में इस असल का इन्कार करने वाले लोग भी मौजूद हैं" और इस वक़्त हम देखते हैं कि मुस्लमानों के अधिकतर लोग यही कहते हैं। "अगर दुनिया इस मसले को समझ जाए तो निसंदेह ज़ुलम और धार्मिक दुश्मनी और सयासी उमूर में बंद हो जाए। न लोग अपने अक़ीदे लोगों पर जबरन ठोंसे और न अपने सयासी निज़ाम दूसरे मुल्कों में जबरन जारी करने की कोशिश करें।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 7 पृष्ठ 606 - 607)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मैं नहीं जानता कि हमारे मुख़ालिफ़ों ने कहाँ से और किस से सुन लिया है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। ख़ुदा तो क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है لَاۤ اِکۡرَاہَ فِی الدِّیۡنِ अर्थात दीन-ए-इस्लाम में जबर नहीं। तो फिर किस ने जबर का हुक्म दिया और जबर के कौन से सामान थे। और क्या वे लोग जो जबर से मुस्लमान किए जाते हैं उनका यही सिदक़ और यही ईमान होता है कि बग़ैर किसी तनख़्वाह पाने, बावजूद दो तीन सौ आदमी होने के हज़ारों आदमियों का मुक़ाबला करें। और जब हज़ार तक पहुंच जाएं तो कई लाख दुश्मनों को शिकस्त दे दें और दीन को दुश्मन के हमला से बचाने के लिए भेड़ों बकरियों की तरह सिर कटा दें और इस्लाम की सच्चाई पर अपने ख़ून से मोहरें कर दें। और ख़ुदा की तौहीद के फैलाने के लिए ऐसे आशिक़ हों कि दरवेशाना तौर पर सख़्ती उठा कर अफ़्रीक़ा के रेगिस्तान तक पहुँचें और इस मुल्क में इस्लाम को फैलावें। और फिर प्रत्येक प्रकार की कठिनाइयां उठाकर चीन तक पहुंचीं न जंग के तौर पर बल्कि केवल दरवेशाना तौर पर और इस मुल्क में पहुंच कर दावत-ए-इस्लाम करें जिस का नतीजा यह हो कि उनके बाबरकत उपदेशों से कई करोड़ मुस्लमान इस ज़मीन में पैदा हो जाएं। और फिर टाट पोश दरवेशों के रंग में हिन्दुस्तान में आएं और बहुत से हिस्सा आर्या व्रत को इस्लाम से मुशर्रफ़ कर दें और यूरोप की हदूद तक لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की आवाज़ पहुंचावें। तुम ईमानन कहो कि क्या यह काम उन लोगों का है जो जबरन मुस्लमान किए जाते हैं जिन का दिल काफ़िर और ज़बान मोमिन होती है? नहीं बल्कि यह उन लोगों के काम हैं जिनके दिल नूर-ए-ईमान से भर जाते हैं और जिनके दिलों में ख़ुदा ही ख़ुदा होता है।" (पैग़ाम-ए- सुलह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 468-469)

इन क़ुरआन-ए-करीम की आयात और इर्शादात की रोशनी में यह तो साबित हो गया कि मुर्तद की सज़ा क़तल नहीं है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि यदि मुर्तद की सज़ा क़तल नहीं तो हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुर्तदीन को क्यों क़तल किया और क़तल करने का आदेश दिया?

वास्तविकता यह है कि तारीख़ का अध्यन करने से बड़ी आसानी से मालूम हो सकता है कि हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में मुर्तद होने वाले केवल मुर्तद ही नहीं थे बल्कि वे बाग़ी थे और ख़ूँख़ार इरादों वाले बाग़ी थे जिन्होंने न केवल यह कि रियासत-ए-मदीना पर हमला करके मुस्लमानों को क़तल करने के भयानक मंसूबे बनाए बल्कि मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में मुस्लमानों को पकड़ पकड़ कर बड़ी बेरहमी से क़तल किया। उनके अंग काट कर उनको मारा गया। उन्हें ज़िंदा आग में जलाया गया। ये मुर्तदीन ज़ुलम-ओ-सितम और क़तल-ओ-ग़ारत और बग़ावत और लूट मार जैसे भयानक अपराध के करने वाले लोग थे जिसकी वजह से दिफ़ाई और इंतेक़ामी कार्रवाई के तौर पर इन मुहारिब लोगों से जंग की गई और جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا के तहत उनको भी वैसी ही सज़ाएं देकर क़तल करने के अहकामात सादर किए गए जैसे जरायम के वे मुर्तक़िब हुए थे। इसलिए तारीख़ और सीरत की किताबों से कुछ तफ़सील पेश की जाती है।

तारीख़ ख़मीस में लिखा है कि खारेजा बिन हिस्न् जो मुर्तदीन में से था अपनी क़ौम के कुछ सवार लेकर मदीना की तरफ़ बढ़ा। वह चाहता था कि अहल-ए-मदीना को जंग के लिए निकलने से पूर्व ही रोक दे या उन्हें ग़फ़लत में पा कर हमला कर दे। इसलिए उसने हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ के मुस्लमानों पर उस वक़्त छापा मारा जबकि वे लोग बेख़बर थे।

(तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 173 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2009 ई.)

मुर्तदीन ने न केवल मदीना पर हमला किया बल्कि जब हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें शिकस्त दी तो उन्होंने अपने ईमान में सच्चे मुस्लमानों को भी तलवार की धार कर दिया जो उन क़ौमों में बस्ते थे जैसा कि पिछले ख़ुतबा में इस का मैं वर्णन कुछ कर चुका हूँ और जो बावजूद अपनी क़ौम के मुर्तद हो जाने के इस्लाम पर क़ायम रहे थे।

इसलिए अल्लामा तिब्री लिखते हैं कि जब हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़्तलिफ़ हमला-आवर क़बायल को शिकस्त दी तो बनू ज़ुबियान और अबस इन मुस्लमानों पर हमला-आवर हुए जो उन में रहते थे और उन को हर एक तरीक़ से क़तल किया और उनके अन्य अक़्वाम के बाद भी उन्ही की तरह किया अर्थात उन्होंने भी ऐसे लोगों को क़तल कर दिया जो इस्लाम पर क़ायम रहे।

(तबरी, भाग 2 पृष्ठ 256 दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

अल्लामा इब्न-ए-असीर लिखते हैं कि अबस और बनू ज़ुबियान क़बायल ने अपने हाँ के निहत्ते मुस्लमानों को बुरी तरह क़तल करना शुरू कर दिया और उनकी देखा देखी दूसरे क़बायल ने भी ऐसा ही किया। इस पर हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़सम खाई कि वे हर क़बीले के उन लोगों को अवश्य क़तल करेंगे जिन्हों ने मुस्लमानों को क़तल किया है।

(البدایہ والنہایہ لابن کثیر، جلد3، جزء 6، صفحہ 310، فَصۡلٌ فِی تصدِّی الصِّدیق لِقِتَالِ أَھۡلِ الرِّدَّةِ ، دارالکتب العلمیة بیروت) जैसा कि वर्णन किया गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर जिन क़बायल ने इर्तेदाद इख़तियार किया उनका इर्तेदाद मज़हबी इख़तेलाफ़ तक सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने सलतनत-ए-इस्लामी से बग़ावत इख़तियार की थी। तलवार को अपने हाथ में लिया था। मदीना मुनव्वरा पर हमला किया। अपनी अपनी क़ौमों के मुस्लमानों को क़तल किया। आग में डाला और उनके अंग काटे गए। जैसा कि तारीख़ तिब्री में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब असद और ग़तफ़ान और होवाज़न और सुलेम और तेय को शिकस्त हुई तो ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे माफ़ी क़बूल नहीं की सिवाए इसके कि वे आपके पास उन लोगों को लेकर आएं जिन्हों ने मुर्तद होने की हालत में मुस्लमानों को आग में डाल कर जलाया और उनके अंग काटे और उन पर मज़ालिम बरपा किए।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 265 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

अल्लामा इब्ने ख़ुलदून लिखते हैं कि अरब द्वीप के ये मुर्तद क़बायल मुदीना का क़सद करते हुए निकले ताकि हज़रत अबू बक़्र रज़ियल्लाहु अन्हु और

मुस्लमानों के साथ जंग करें।

(तारीख़ इब्ने ख़ुलदून, भाग 2 पृष्ठ 436 ख़बर बनी तमीम और सजाह, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.)

तारीख़ तिब्री में लिखा है कि सबसे पहले अबस और ज़ुबियान ने हमला किया। इसलिए हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की वापसी से पूर्व उनसे लड़ाई करनी पड़ी।

(तारीख़ अल् तिब्री لابن جرير الطبرى، جلد 2، صفحه 254، باب بقية الخبر عن امر الكذب العَنْسِى , दारुल फ़िक़र 2002 ई.)

अल्लामा इब्न-ए-ख़ुलदून लिखते हैं कि रबीया क़बीला ने इर्तेदाद इख़तियार कर लिया और उन्होंने मुनज़िर बिन नुमान को खड़ा किया जिसका नाम मग़रूर पड़ा हुआ था। उन्होंने उसे बादशाह बना दिया। (तारीख़ इब्ने ख़ुलदून, भाग 2, पृष्ठ 439-440 बाब ردة الحطم و اهل البحرين, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.)

अल्लामा ऐनी जो सही बुख़ारी के भाष्यकार हैं वह लिखते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़कात देने से इन्कार करने वालों से केवल इसलिए क़िताल किया क्योंकि उन्होंने तलवार के द्वारा से ज़कात रोकी और उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िलाफ़ जंग बरपा की।

(उमदतुल कारी,كتاب استتابة المرتدين و المعاندين و قتالهم، باب قتل من ابى...الخ, भाग 24 पृष्ठ 122 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)

अल्लामा शौकानो वर्णन करते हैं कि इमाम ख़िताबी ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद इर्तेदाद इख़तियार करने वालों और ज़कात इत्यादि की अदायगी से इन्कार करने वालों के बारे में मुख़्तलिफ़ उमूर तहरीर करने के बाद लिखा है कि ये लोग वास्तव में बाग़ी ही थे और उनको मुर्तद केवल इस वजह से कहा गया है कि ये लोग मुर्तदीन की जमाअतों में दाख़िल हो गए थे। (نيل الاوطار لعلامة محمد الشوكانى,किताब अल् ज़कात, पृष्ठ 724 दारुल किताब अरबी बेरूत 2004 ई.)

एक मुसन्निफ़ ने बार-बार अपनी किताब में इर्तेदाद इख़तियार करने वालों के लिए बग़ावत और बाग़ी इत्यादि के शब्द लिखे हैं। इसलिए वे कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर सारे अरब में फैल गई और हर तरफ़ बग़ावत के शोले भड़कने लगे तो उन शोलों की ज़द में सबसे ज़्यादा यमन का इलाक़ा था। जबकि आग का भड़काने वाला व्यक्ति उनका क़तल हो चुका था। बनू हनीफा में मुसैलमा और बनू असद में तुलेहा ने नबुव्वत का दावा कर के हज़ारों लोगों को अपने साथ मिला लिया और लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि असद और ग़त्फ़ान के हलीफ़ क़बीलों का नबी हमें क़ुरैश के नबी से ज़्यादा महबूब है क्योंकि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) वफ़ात पा चुके हैं और तलेहा ज़िंदा है जब इन बग़ावतों की ख़बर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया कि हमें उस वक़्त तक इंतिज़ार करना चाहिए जब तक इन इलाक़ों के अमाल और उमरा की तरफ़ से समस्त वाक़ियात की मुकम्मल रिपोर्टें प्राप्त न हो जाएं। ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि उमरा की तरफ़ से रिपोर्टें पहुंचने लगीं। इन रिपोर्टों से साफ़ ज़ाहिर होता था कि बाग़ीयों के हाथों न केवल सलतनत का अमन ख़तरे में था बल्कि उन लोगों की जानों को भी सख़्त ख़तरा था जिन्हों ने इर्तेदाद की लड़ी में बाग़ीयों का साथ नहीं दिया था और इस्लाम पर क़ायम रहे थे। इस सूरत-ए-हाल में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए पूरी क़ुव्वत से बग़ावतों का मुक़ाबला करना और बाग़ीयों को हर क़ीमत पर ज़ेर कर के सूरत-ए-हाल को क़ाबू में लाने के सिवा कोई चारा नहीं था।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 131 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर)

एक मुसन्निफ़ लिखते हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के पेश-ए-नज़र उन मुर्तदीन की सरकूबी थी जो अरब के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में बग़ावत के शोलों को हवा दे रहे थे और उनके हाथों इस्लाम की शमा और उनके परवानों को सख़्त ख़तरा लाहक़ था।

(उद्धरित सय्यदना अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ अबू नसर अनुवादक, पृष्ठ 603)

फिर एक मुसन्निफ़ लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद बहुत से सरदार के अरब मुर्तद हो गए और हर एक अपने अपने इलाक़े में ख़ुद-मुख़्तार हो गया। शोधकर्ताओं के मुताबिक़ ये इर्तेदाद ज़्यादा-तर सयासी था। धार्मिक इर्तेदाद बहुत ही कम था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस दुनयवी ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम में अरब के कुछ क़बायल के लीडरों ने अपनी बग़ावत की सयासी तहरीक को मज़हबी रंग देने के लिए नबुव्वत का दावा कर दिया।

(उद्धरित ख़ुलफ़ा ए राशेदीन अज़ हकीम ज़फ़र, पृष्ठ 58 मुद्रित तख़लीक़ात अकरम आर्केडीला लाहौर)

बहरहाल यह सिलसिला अभी चल रहा है इं शा अल्लाह इस का बक़ीया हिस्सा आइन्दा इं शा अल्लाह पेश होगा।

इन तारीख़ी हवालों का ख़ुलासा यही है कि मुर्तद होने वाले क़बायल ने ज़कात का धन रोक लिया था अर्थात हुकूमत का टैक्स जबरन रोक लिया था। कुछ जगह से ज़कात का रुपया को लूट लिया था। फ़ौजें तैयार कीं। दारुल खिलाफ़ा मदीना पर हमले किए। जिन मुस्लमानों ने इर्तेदाद से इन्कार किया उनको क़तल कर दिया। कुछ को ज़िंदा आग में जला दिया। इस लिए ऐसे मुर्तदीन हुकूमत के ख़िलाफ़ सशस्त्र बग़ावत, हुकूमत के अम्वाल को लूटने और मुस्लमानों को क़तल करने और उन्हें ज़िंदा जला देने की आधार पर क़तल की सज़ा के मुस्तहिक़ हो चुके थे। जैसा कि क़ुरान-ए-पाक फ़रमाता है جَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا (अल् शौरा : 41) कि मुजरिम जैसा कि जुर्म करे उस को वैसी ही सज़ा दो। एक और जगह फ़रमाया إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ (अल् मायद : 34)

कि जो लोग अल्लाह और रसूल से जंग करें अर्थात जिससे मुराद यह है कि जो लोग रसूल और ख़लीफ़ा रसूल या इस्लामी हुकूमत के साथ जंग करें क्योंकि अल्लाह के साथ लड़ाई नहीं हो सकती। अल्लाह को न थप्पड़ मारा जा सकता है न पत्थर न तीर न तलवार। इसलिए उनसे जंग करने से मुराद है وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا में इस बात का वर्णन किया गया है कि अल्लाह और रसूल से जंग से किया मुराद है। इस की तफ़सील यह है कि जो लोग अल्लाह और रसूल से जंग करते हैं अर्थात मुल्क में फ़साद करते हैं। क़तल-ओ-ग़ारत, डाका ज़नी, लूट मार, सशस्त्र बग़ावत करते हैं उनकी सज़ा यह है कि يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا उन्हें सख़्ती से क़तल किया जाए या सलीब पर मार दिया जाए। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा थोड़ा सा मैंने आगे वर्णन कर दिया था। बाक़ी इं शा अल्लाह आगे वर्णन होगा।

इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ जिनके जनाज़े नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा। पहला वर्णन सम्मानीय मुहम्मद बशीर शाद साहिब का है जो रिटायर्ड मुरब्बी सिलसिला थे। आजकल यह अमरीका में थे। इकानवे वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके को 1926 ई. में बैअत की तौफ़ीक़ मिली थी। 1945 ई. में उन्होंने मिडल पास करने के बाद मद्रस्सा अहमदिया में दाख़िला लिया। 1952 ई. में फ़ाज़िल अरबी की परीक्षा अच्छी पोज़ीशन में पास की। 1954 ई. में जामिआतुल मुबश्शेरीन रब्वाह से शाहिद की डिग्री प्राप्त की। फिर एक वर्ष चिकत्सा की शिक्षा प्राप्त की। 56 ई. से 57 ई. तक उनको वकालत तिबशीर् रब्वाह में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1958 ई. में यह सीरालियून चले गए। वहां मुबल्लिग़ के तौर पर भेजे गए। वहां उनको विभिन्न स्थानों पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। वहां सीरालियून में प्रैस भी इस दौरान उन्होंने जारी किया। फिर उनका चयन वहां से नाईजेरिया हो गई। वहां भी उन्होंने अच्छा काम किया। फिर तीन वर्ष के बाद 1964 ई. में ये नाईजेरिया से वापस बुला लिए गए थे। फिर 64 ई. में दुबारा उनको नाईजेरिया भेजा गया। 67ई. में मरहूम बेनिन के तब्लीग़ी दौरे पर गए। वहां स्थानीय लोगों को तब्लीग़ कर के उनकी बैअतें हासिल करने की अल्लाह तआला ने उनको तौफ़ीक़ दी। 1970 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के अफ़्रीक़ा के दौरे के दौरान जब हज़रत ख़लीफ़ा सालिस कानो तशरीफ़ लाए तो उन्होंने 100 नए अहमदियों का तोहफ़ा

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पेश किया हुज़ूर की ख़िदमत में। इस पर हुज़ूर रहमहुल्लाह ने ख़ुशनुदी का इज़हार फ़रमाया, दुआ कराई और फिर अपनी दस्तारे मुबारक भी बशीर शाद साहिब को अता फ़रमाई। 1970 ई. में जब उनकी वापसी हुई तो उम्रे का सौभाग्य भी मिला। 1983 ई. में मरहूम का चयन बतौर सैक्रेटरी मज्लिस कारपर्दाज़ बहिश्ती मक़बरा रब्वाह हुआ और 1984 ई. में जमाअत के ख़िलाफ़ जो आर्डीनैंस हुआ था उसके बाद जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबा रहमहुल्लाह को हिज्रत करनी पड़ी तो हिज्रत से पूर्व हज़रत ख़लीफ़ राबे रहमहुल्लाह की मौजूदगी में जो ख़ुतबा था वे उनको देने की तौफ़ीक़ मिली। इस लिहाज़ से उनका इस तारीख़ में भी वर्णन है। 1988 ई. में ज़ाती हालात की वजह से मरहूम ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे से रिटायरमैंट की दरख़ास्त की जो क़बूल हो गई और फिर अमरीका चले गए। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी सम्माननीया नसरीन अख़्तर शाद साहिबा और एक बेटा और चार बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी कामिल वफ़ा के साथ जमाअत और ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे।

अगला वर्णन राना मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब का है जो राना इलम-ए-दीन साहिब मल्यानावाला ज़िला स्यालकोट के बेटे थे। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम के पिता ने1938 ई. में क़ादियान जा कर बैअत की थी। मरहूम नमाज़ रोज़े के पाबंद थे। तहज्जुद गुज़ार थे। दुआ-गो थे। बहुत बहादुर और निडर इन्सान थे। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत करते, ख़लीफ़ा वक़्त के हुक्म पर अमल करने वाले थे। अपने सारे बच्चों को हमेशा जमाअत से वाबस्ता रहने और ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इताअत की तलक़ीन की। 1974 ई. और 84 ई. में उन पर जमाअत की मुख़ालिफ़त की वजह से सख़्त हालात भी आए लेकिन उन्होंने बड़ी साबित क़दमी दिखाई। पीछे रहने वालों में छ: बेटे और एक बेटी शामिल हैं। उनके एक बेटे राना मुहम्मद अकरम महमूद साहिब नाईजीरिया में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं जो मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपने पिता के जनाज़े और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। इस से पहले उनकी माता भी 2018 ई. में वफ़ात पा गई थीं। ये इस में भी शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उन्हें सब्र और हौसला अता फ़रमाए और मरहूम की मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन सम्मानीय डाक्टर महमूद अहमद ख़्वाजा साहब इस्लामाबाद का है। उनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 78 साल उनकी उम्र थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पिता ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़ साहिब के द्वारा हुआ। उन्होंने एक ख़ाब की बिना पर हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में बैअत की थी। बड़े नेक फ़ित्रत थे। इसलिए बावजूद इस के कि बाक़ी ख़ानदान जमाअत का मुख़ालिफ़ था अल्लाह तआला ने उनको तीन मर्तबा ख़ाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने का हुक्म दिया। आख़िर उन्होंने बैअत की।

डाक्टर महमूद ख़्वाजा साहिब ने आरंभिक तालीम पेशावर से हासिल की। इस के बाद 1966 ई. में यूनीवर्सिटी आफ़ पेशावर से कैमिस्ट्री में ऐम. एस.सी की डिग्री हासिल की। फिर1973 ई. में लाटरोब यूनीवर्सिटी (La trobe university) ट्रोबे है या ट्रोब है मलबर्न आस्ट्रेलिया से पी. एच.डी की डिग्री हासिल की। पाकिस्तान में भी और बाहर भी मुख़्तलिफ़ यूनीवर्सिटीज़ में पढ़ाते रहे हैं। घाना में कैप कोस्ट यूनीवर्सिटी (cape coast university) में जब पढ़ाते थे तो वहां उनकी मुझ से वाक़फ़ीयत हुई थी और मैं ने देखा है इंतिहाई सादा-मिज़ाज और आजिज़ और बेनफ़्स इन्सान थे। बहुत अच्छे रिसर्च स्कॉलर थे। पाकिस्तान में भी और बाहर भी उनकी रिसर्च स्कॉलर के तौर पर बड़ी क़दर की जाती थी। चौधरी अकरामुल्लाह साहिब की बेटी अम्तुल क़य्यूम साहिबा से उनकी शादी हुई। उनका एक बेटा और एक बेटी हैं।

डाक्टर महमूद ख़्वाजा साहिब को नुसरत जहां स्कीम के तहत 1979 ई. से 1984 ई. तक सीरालियून में अपनी पत्नी के साथ वक़्फ़ की भी तौफ़ीक़ मिली। उनके बेटे डाक्टर तारिक़ ख़्वाजा कहते हैं कि रमज़ान में विशेषता क़ुरआन-ए-करीम अनुवाद के साथ बहुत ग़ौर और इन्हिमाक से पढ़ते थे। इस बात पर-ज़ोर देते थे कि ख़ुदा और उसके रसूल और ख़लीफ़ा के इर्शादात को ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वे हैं पेश करना चाहिए। शब्दों की मामूली ग़लती से भी ग़लत अर्थ लिए जा सकते हैं। अब्दुल बारी साहिब अमीर ज़िला इस्लामाबाद लिखते हैं कि मुझे भी और ख़्वाजा साहिब को भी नुसरत-जहां स्कीम के तहत सीरालियून में एक साथ ख़िदमत करने का अवसर मिला। पाकिस्तान वापसी पर आपने पहले गर्वनमैंट के इदारा में मुलाज़मत इख़तियार की। इसके बाद इस्लामाबाद शिफ़्ट हो गए जहां एस.डी. पी. आई में शमूलीयत इख़तियार की। आप इस विभाग में बहुत मक़बूल हुए और शौहरत के बावजूद आपने कमाल इख़लास से काम किया। आपने खाने की वस्तुएं, निज़ाम निकासी और अन्य सुन्दरता की वस्तुएं (बीयूटी प्रोडक्ट्स) इत्यादि में मौजूद ख़तरनाक कैमीकल के अंत के लिए काम किया और इस काम में बैनुल अक़वामी तौर पर काफ़ी शौहरत हासिल की और इस हवाले से कई पुस्तकें लिखीं। जब भी कोई किताब तहरीर करते तो उस किताब की एक नक़ल बारी साहिब कहते हैं कि मुझे भी भिजवाते। कहते हैं मेरे पास अब उनकी काफ़ी कुतुब मौजूद हैं। निहायत मुख़लिस अहमदी थे। ख़िलाफ़त के साथ मुहब्बत का ताल्लुक़ था। हमेशा ख़ुद्दाम की तर्बीयत के लिए उनकी कमज़ोरीयों की निशानदेही करते रहते।

ख़्वाजा महमूद साहिब के बारे में पाकिस्तान के इलावा जर्मनी, स्वीडन, बुर्कीना फासो, अमरीका, अज़रबाईजान, स्विटज़रलैंड, नाईजीरिया, मिस्र, बहरीन और बहुत से देशों के विज्ञानिकों और हुकूमती वज़ारतों के नुमाइंदों ने और यूनीवर्सिटीज़ के चांसलरज़ और प्रोफ़ैसर्ज़ ने, सिवल सोसाइटी के एन. जी. औज़ के सदरान ने अफ़सोस के संदेश भेजे थे। उनके काफ़ी पैग़ाम आए थे। मुझे भी उनके बच्चों ने भिजवाए। उदाहरण के लिए एक दो पैग़ाम पढ़ देता हूँ।

मिस्टर चार्ल्स जी ब्राउन (charles G. brown) सदर वर्ल्ड अलाउंस फ़ार मरकरी फ़्री डेंटिस्ट्री (world alliance for mercury-free dentistry) वाशिंगटन डी. सी. अमरीका ने लिखा कि डाक्टर महमूद ख़्वाजा इंतिहाई मुनफ़रद बुद्धिमान और बहुत नायाब समाजी कारकुन थे। जदीद साईंस और ज़हरीले मादों पर उनकी शानदार विज्ञानिक लेख स्कालरशिप को तरक़्क़ी देने और सरकारी और निजी विभागों को काम की बुनियाद फ़राहम करने के लिए बहुत अहम हैं। विश्वव्यापी तन्ज़ीमों के द्वारा काम करने वाली उनकी कई दहाईयों पर मुहीत काविशों ने लोगों के मध्य मुआहिदों को अमली जामा पहनाने, सिवल सोसाइटी के मध्य बाहमी हम-आहंगी को बढ़ावा देने और पाकिस्तान में ज़हरीले मवाद को कम करने में मदद की। उन्हें 2019 ई. में पी. बी. सी. (the pacific basin consortium for environment and health chairman) का ऐवार्ड मिला। डाक्टर महमूद के कारनामों में एक विश्वव्यापी तिब्बी तंज़ीम का सदर होना भी शामिल है। वे अब तक मुंतख़ब किए गए सदूर में से वाहिद डाक्टर हैं जो फ़ज़ीशन नहीं थे बल्कि पी. एच.डी. डाक्टर थे।

इसी तरह और भी बहुत सारे साईंसदानों ने आपकी तारीफ़ की है जिनमें जर्मनी के भी और स्विटज़रलैंड के भी डाक्टर शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके परिजनों को सब्र अता फ़रमाए और उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

طالبِ دعا

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001

0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AICCE-0289/Raj.

पृष्ठ 2 का शेष

फ़ैमिलीज़ यहां पहुंची हुई हैं। बहुत सी फ़ैमिलीज़ तो इर्द-गिर्द के विभिन्न होटलों में ठहरी हुई हैं और कुछ क़रीब की जगहों पर ठहरे हुए हैं और हुज़ूर अनवर की इक़्तदा में नमाज़ों की अदायगी की तौफ़ीक़ पा रहे हैं।

अपने प्यारे आक़ा के मुबारक व्यक्तित्व से बरकतें समेट रहे हैं और बरकतों और अल्लाह के फ़ज़्लों के हुसूल का कोई लम्हा भी हाथ से नहीं जाने देते। अपने छोटे बच्चों समेत नमाज़ों में शामिल हो रहे हैं।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी पत्र और रिपोर्टें मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

प्रोग्राम के अनुसार पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मर्यम पधार कर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर ने नैशनल सदर साहब आयरलैंड को बाहर से आने वाले मेहमानों के बारे में प्रशासनिक हिदायात से नवाज़ा। मस्जिद मर्यम के उद्घाटन के अवसर पर बर्तानिया से विभिन्न लोगों आयरलैंड पहुंचे हैं और मेहमानों की आमद का सिलसिला जारी है। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ आए।

प्रोग्राम के अनुसार आज शाम फ़ैमिली मुलाक़ातें थीं। होटल के ही एक हिस्सा में कान्फ़्रैंस रुम प्राप्त करके मुलाक़ातों का प्रबन्ध किया गया था

फ़ैमिली मुलाक़ातें

सवा छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो-तआला मुलाक़ातों के लिए पधारे। आज जमाअत गालवे के इलावा Tralee, Limerick, Killarny Glanmire, Ballin Colling, Athlone की जमाअतों से आने वाली 38 फ़ैमिलीज़ के 149 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपने समस्याओं और मुश्किलात प्रस्तुत करके दुआ का निवेदन किया और हुज़ूर अनवर से रहनुमाई प्राप्त की। बच्चों और बच्चियों ने अपनी शिक्षा में सफ़लता के लिए अपने प्यारे आक़ा से दुआएं लीं। शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। और मुलाक़ात करने वाले ये ख़ानदान कभी न ख़त्म होने वाली दुआएं लेते हुए और बरकतें समेटते हुए यहां से विदा हुए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े आठ बजे ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मर्यम पधार कर नमाज़ मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सदर साहब जमाअत आयरलैंड आदरणीय डाक्टर अनवर मलिक साहब को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि कल जुमा के अवसर पर लोगों की संख्या ज़्यादा होगी। दूसरे देशों से भी लोग आरहे हैं। इस लिए मस्जिद के साथ जो लॉबी और Corridor गैलरी हैं उनमें भी क़िबला रुख लाइनें लगवाएं ताकि लोग यहां नमाज़ पढ़ सकें और सफ़ें सीधी हों।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अपनी रहने के स्थान होटल Clayton पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक व्यक्तित्व से अपने और बेगाने सभी फ़ैज़याब हो रहे हैं। "मस्जिद मर्यम" के उद्घाटन के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आयरलैंड आने की ख़बर अख़बारात और रेडियो पर आई है। आज शाम नैशनल सदर साहब को उनके ऐडरैस पर एक कैथोलिक महिला का ईमेल आया महिला ने लिखा कि मुझे ज्ञान हुआ है कि अहमदिया जमाअत के ख़लीफ़ा गालवे आयरलैंड आए हुए हैं। आज मेरे पति का हस्पताल में ऑप्रेशन हो रहा है। आप ख़लीफतुल मसीह से मेरे पति की सेहत के लिए दुआ की दरख़ास्त करें।

मस्जिद के साऊँड सिस्टम के लिए एक साऊँड सिस्टम कंपनी के मालिक Mr. Fintan पिछली पाँच छ: दिन से मस्जिद में काम कर रहे हैं। उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को मस्जिद में नमाज़ें पढ़ाते देखा है।

कहने लगे कि मैं ख़लीफतुल मसीह को देखकर बेहद प्रभावित हुआ हूँ। मैं कैथोलिक हूँ। चर्च जाता हूँ परन्तु यहां आकर मैंने महसूस किया है कि मेरी जीवन में एक बदलाव आ रहा है। मुझे अपने दिल में एक सुकून महसूस हो रहा है। चर्च में तो मुझे आज तक ख़ुदा नहीं मिला। यहां जब से मैंने ख़लीफतुल मसीह को देखा है नमाज़ें पढ़ाते देखा है तो मुझे यहां ख़ुदा नज़र आ रहा है। मुझे यहां ख़ुदा मिल गया है। मैंने ख़लीफतुल मसीह के साथ सज्दे किए हैं और दुआ करता हूँ।

उन्होंने हुज़ूर अनवर से भेंट की। कहने लगे अब मैं ख़लीफतुल मसीह से मिलने के बाद एक नुमायां बदलाव अपने अंदर महसूस करता हूँ।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हुज़ूर अनवर की इस यात्रा की बरकात क़दम क़दम पर प्रकट हो रही हैं और मसीह मूसवी के मानने वाले मसीह मुहम्मदी की ओर मुतवज्जा हो रहे हैं और उनके दिल इस्लाम की ओर मायल हो रहे हैं।

आज सुबह आयरलैंड के नैशनल रेडीयो Rte-1 ने मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से चार से पाँच मिनट का एक प्रोग्राम प्रसारित किया। जिसमें नैशनल सदर साहब आयरलैंड, जमाअत गालवे के लोकल सदर और मुबल्लिग़ इंचार्ज इब्राहीम नोंन साहब के मस्जिद के हवाले से इंटरव्यू प्रसारित किए। जर्नलिस्ट ने यह इंटरव्यूज़ प्रसारित करते हुए कहा कि जमाअत आयरलैंड की संख्या पांच सौ के क़रीब है। परन्तु जमाअत अहमदिया की यह मस्जिद समस्त मुस्लमानों और ग़ैर मुस्लिम लोग के लिए खुली है। जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा मस्जिद के उद्घाटन के लिए आयरलैंड पधारे हैं। वह इस मस्जिद का उद्घाटन करेंगे।

26 सितम्बर 2014 शुक्रवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजकर दस मिनट पर मस्जिद मर्यम में पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले आए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

आज शुक्रवार और आयरलैंड की सरज़मीन पर जमाअत अहमदिया आयरलैंड की पहली मस्जिद मर्यम के उद्घाटन का दिन था। आज का दिन जमाअत अहमदिया आयरलैंड की तारीख़ में कई दृष्टि से अत्यधिक अहमियत का हामिल और एक तारीख़ी दिन है। आयरलैंड की तारीख़ में यह उनका पहला ऐसा जुमा था जो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नई बनने वाली मस्जिद मर्यम में पढ़ाया। फिर यह पहला ऐसा जुमातुल मुबारक था जो मस्जिद मर्यम से सीधा दुनिया-भर में ऐम. टी. ए इंटरनैशनल पर सीधा प्रसारित हुआ। फिर यह ख़ुतबा मुल्क आयरलैंड के शहर गालवे से प्रसारित हुआ जो एक ऐसे इलाक़े में स्थित है जो संसार का किनारा है।

आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ये इल्हाम कि "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा" एक और नई शान के साथ पूरा हुआ हैकि ख़लीफतुल मसीह की आवाज़ संसार के इस किनारा पर बनने वाली मस्जिद मर्यम से संसार के समस्त देशों और संसार के समस्त दूसरे किनारों तक है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपनी पहली यात्रा आयरलैंड में 17 सितम्बर 2010 ई. को होटल CLAYTON के एक हाल में ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया था

"यदि देखा जाए तो गालवे भी एक दृष्टि से संसार का किनारा बनता है। समुंद्र के किनारे स्थित है। ATLANTIC OCEAN ऊक़ियानूस के समुद्र पर आता है। इसके बाद सीधी लाईन में तो यूरोप के और कोई जज़ीरे नहीं हैं। यहां सिलसिला ख़त्म हो जाता है और यदि लाईन खींचीं तो समुंद्र के बाद कैन्डा, अमरीका इत्यादि के इलाक़े फिर शुरू हो जाते हैं। तो इस दृष्टि से यह भी एक किनारा है जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के मानने वालों को एक मस्जिद बनाने की इं शा अल्लाह तआला तौफ़ीक़ मिल रही है ताकि वहदानीयत का ऐलान इस इलाक़े से भी संसार को पहुंचे।"

शेष आगे

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है
(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत, क़ादियान (भाग-10)

आरोप आयत नंबर 2(q)

اِنَّ اللّٰہَ اشۡتَرٰی مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنۡفُسَہُمۡ وَاَمۡوَالَہُمۡ بِاَنَّ لَہُمُ الۡجَنَّۃَ یُقَاتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ فَیَقۡتُلُوۡنَ وَیُقۡتَلُوۡنَ ۟ وَعۡدًا عَلَیۡہِ حَقًّا فِی التَّوۡرٰىۃِ وَالۡاِنۡجِیۡلِ وَالۡقُرۡاٰنِ ؕ وَمَنۡ اَوۡفٰی بِعَہۡدِہٖ مِنَ اللّٰہِ فَاسۡتَبۡشِرُوۡا بِبَیۡعِکُمُ الَّذِیۡ بَایَعۡتُمۡ بِہٖ ؕ وَذٰلِکَ ہُوَالۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ

(सूर: अल् तौबाा, सूर: नंबर 9 आयत नंबर : 111)

अनुवाद : निसंदेह अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके अम्वाल ख़रीद लिए हैं ताकि इस के बदला में उन्हें जन्नत मिले। वो अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं अत: वे क़तल करते हैं और क़तल किए जाते हैं। उसके ज़िम्मा यह पक्का वादा है जो तौरात और इंजील और क़ुरआन में (वर्णन) है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपने वादे को पूरा करने वाला है। अत: तुम अपने इस सौदे पर ख़ुश हो जाओ जो तुमने उसके साथ किया है और यही बहुत बड़ी सफ़लता है।

स्पष्टीकरण : इस्लामी अक़ीदे के अनुसार इन्सान को यह जीवन अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से अता की है। और माल भी उसके फ़ज़ल से मिलता है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने समस्त लोगों के लिए दीन-ए-इस्लाम पसंद किया है अत: जिसकी समझ में आए वह उसे क़बूल कर ले और फिर इस पर डटे रहे और सख़्त आज़माईशों में भी उसके डटे रहने में लग़्ज़िश नहीं आनी चाहिए और हर हाल में अपने दीन पर क़ायम और दाइम रहे और इसी उसूल के पेश-ए-नज़र अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब जंग की हालत तुम पर डाल दी जाए तो तुम पूरी ताक़त के साथ अपना दिफ़ा करो और दुश्मन का मुक़ाबला करो और इस के लिए अगर आपको अपनी जान भी क़ुर्बान करनी पड़े तो वह भी दो और माल भी क़ुर्बान करना पड़े तो वह भी दो और समझ लो कि ये सब अस्थाई चीज़ें हैं।

अल्लाह तआला ने एक उदाहरण के माध्यम से यह समझाया कि जैसे तुम किसी व्यापारी से वस्तुएं ख़रीदते हो और उन वस्तुओं के बदले में तुम उसे अपने माल में से क़ीमत अदा करते हो अत: जब तुम अपने दीन के दिफ़ा और उसकी हिफ़ाज़त और इस पर साबित-क़दम रहने के लिए अपनी जानें और माल क़ुर्बान करोगे तो यक़ीन कर लू कि तुम अपनी जान और माल अल्लाह को बैच रहे होगे और अल्लाह तुम्हें उस की क़ीमत अगले संसार में अदा करेगा। इस मिसाल के माध्यम से अल्लाह तआला ने समझाया है कि जान और माल अता करने वाला अल्लाह तआला है और क़ुर्बानी देने वाला उसकी प्रतिफल अल्लाह तआला से ही पाएगा और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया कि यह वादा तौरात और इंजील में भी मौजूद है फिर अल्लाह तआला ने यह खुशखबरी भी दी और यक़ीन भी दिलाया कि हे मोमिनो अपने इस सौदे पर किसी किस्म का अफ़सोस न करो बल्कि ख़ुश हो जाओ यह घाटे का सौदा नहीं है।

यहां यह स्पष्टीकरण ज़रूरी है कि यहां इन जंगों का वर्णन है जो इस्लामके आरंभ में लड़ी जाती थीं और सहाबा किराम इस में बे दरेग़ अपनी जानें और माल क़ुर्बान करते थे और तारीख़ गवाह है कि अल्लाह तआला ने आख़िरत में जो उनको देने का वादा किया है वह तो देगा ही परन्तु इस दुनिया में अल्लाह तआला ने उनकी औलादों को बेशुमार नेअमतों से नवाज़ा ।

इस स्पष्टीकरण से इस आयत पर किसी किस्म का कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता।

आरोप नंबर : 2(r)

وَمِنۡہُمۡ مَّنۡ یَّلۡمِزُکَ فِی الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنۡ اُعۡطُوۡا مِنۡہَا رَضُوۡا وَاِنۡ لَّمۡ یُعۡطَوۡا مِنۡہَاۤ اِذَا ہُمۡ یَسۡخَطُوۡنَ

(सूर: अल् तौबाा, सूर: नंबर 9 आयत नंबर 58)

अनुवाद और उनमें से ऐसे भी हैं जो तुझ पर सदक़ात के बारे में इल्ज़ाम लगाते हैं। अगर इन (सदक़ात) में से कुछ उन्हें दे दिया जाए तो ख़ुश हो जाते हैं और अगर उन्हें उनमें से न दिया जाए तो वी फ़ौरन नाराज़ हो जाते हैं।

स्पष्टीकरण : अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में सूरत फ़ातिहा के बाद सूरत इबतिदाई आयात में तीन गिरोहों का वर्णन किया है। पहला गिरोह वह है हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आया और ख़ुलूस-ए-नीयत के साथ आपकी इताअत की। दूसरा गिरोह वह है जिन्हों ने आप पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया। तीसरा वह गिरोह था जो बज़ाहिर तो मुस्लमान हो गया लेकिन आन्तरिक रूप से वह इंकारी ही रहा। न केवल इंकारी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ हमेशा साज़िशें करता रहा और नुक़्सान पहुंचाने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर और आप की पवित्र पत्नियों पर तरह तरह के आरोप लगाया करता था और सीधे साधे मुस्लमानों को दीन-ए-इस्लाम से बदज़न करने की कोशिश करता था। उन्हें आरोपों में से एक यह था कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जो सदक़ात जमा होते हैं वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्तहक़्क़ीन को नहीं देते बल्कि उस की तक़सीम में अपने करीबियों और साथियों को ज़्यादा देते हैं। अल्लाह तआला ने इस इल्ज़ाम का खंडन किया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन आरोपों की तरफ़ इलतिफ़ात न करने की ताकीद फ़रमाई। तथा मुनाफ़क़ीन की यह कैफ़ीयत भी बताई कि अगर उनको उन सदक़ात में से कुछ दिया जाता है तो वे राज़ी और ख़ुश हो जाते हैं और जब उनकी मर्ज़ी और आशा के अनुसार उनकी सहायता नहीं होती तो वे नाराज़गी का इज़्हार करते हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खलिफ़ा को यह ताकीद की कि इस किस्म के इल्ज़ामात मुनाफ़ेक़ीन की तरफ़ से उन पर और मोमिनों की जमाअत पर आइन्दा भी होते चले जाऐंगे। लेकिन तुमने अदल और इन्साफ के साथ अल्लाह के बताए हुए उसूलों के अनुसार सदक़ात को मुस्तहक़्क़ीन में तक़सीम करना है और इल्ज़ाम लगाने वालों के इल्ज़ामात की पूर्णता परवाह नहीं करनी यह एक उसूली तालीम थी जो अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों को दी थी।

आरोप आयत नंबर 2(t)

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الۡیَہُوۡدَ وَالنَّصٰرٰۤی اَوۡلِیَآءَ ۘ بَعۡضُہُمۡ اَوۡلِیَآءُ بَعۡضٍ ؕ وَمَنۡ یَّتَوَلَّہُمۡ مِّنۡکُمۡ فَاِنَّہٗ مِنۡہُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ○

(सूर: अल् मायदा, सूर: नंबर 5 आयत नंबर 52)

अनुवाद हे वे लोगो जो ईमान लाए हो यहूद और नसारा को दोस्त न पकड़ो। वे (आपस ही में) एक दूसरे के दोस्त हैं। और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा वे उन्ही का हो रहेगा। निसंदेह अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देता।

स्पष्टीकरण हर मज़हब में समस्त अफ़राद एक जैसे नहीं होते कुछ बावजूद इख़तिलाफ़ मज़हब के आला अख़लाक़ से मुत्तसिफ़ होते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपने मुख़ालिफ़ाना रविष की वजह से मुस्लमानों के तईं बुग़ज़ और अदावत रखते हैं वे हमेशा मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाने के दर पै रहते हैं इस कारण से कि क़ुरआन-ए-मजीद ने ऐसे नुक़्सान पहुंचाने वाले यहूद और नसारा से दूरी बनाए रखने और दोस्ती न करने की तालीम दी है जबकि यहूद और नसारा में से जो शरीफ़ स्वभाव हैं और उन से किसी किस्म की साज़िश और नुक़्सान का ख़तरा नहीं उनको दोस्त बनाने में कोई हर्ज नहीं है। बल्कि तारीख़-ए-इस्लाम के अध्यन से इलम होता है कि मसाइब और मुख़ालिफ़त के में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को हब्शा के ईसाई बादशाह अस्महा नजाशी के पास चले जाने का हुक्म दिया हालाँकि वे ईसाई था लेकिन अपने हुस्न-ए-सुलूक की वजह से वह मारूफ़ और प्रसिद्ध था और इख़तिलाफ़ अक़ीदा के होने के बावजूद उस ने मुस्लमानों को अपने मुल्क में न केवल पनाह दी बल्कि उनको अपने पांव पर खड़ा होने में भी मदद दी। इसी तरह का एक और वाक़िया यह है कि नजरान से ईसाइयों का एक वफ़द तिथि 24 ज़ीलहज्जा बमुताबिक़ 21 रमज़ान 632 को

आया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका इकराम और सम्मान फ़रमाया और उनको मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में बिठा कर तब्लीग़ी बातचीत की और जब उनकी इबादत का वक़्त आया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया उन्हें इसी मस्जिद में इबादत करने दो इसलिए उन्होंने मशरिक़ की तरफ़ रुख कर के अपनी इबादत की ।

(उद्धरित इब्ने साद, वर्णन वफ़ादातुल अरब वफ़द नजरान)

अत: इन दो वाक़ियात से मालूम हुआ कि जिन यहूद और नसारा से दोस्ती ने रखने की तालीम दी जा रही है वे वही हैं जो इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के ख़िलाफ़ साज़िशें करते थे और नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते थे। इसके इलावा बाक़ी यहूद और नसारा से ताल्लुक़ात रखने में कोई अमर माने नहीं।

आरोप आयत नंबर 2(v)

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (सूर: अल् मायदा, सूर: नंबर 5 आयत नंबर 15)

अनुवाद : और उन लोगों से (भी) जिन्हों ने कहा कि हम ईसाई हैं हमने उनका मीसाक़ (वादा) लिया फिर वे भी इस में से एक हिस्सा भुला बैठे जिसकी उन्हें ताकीदी नसीहत की गई थी। अत: हमने उनके मध्य से क़ियामत के दिन तक आपसी दुश्मनी और द्वेष मुक़द्दर कर दिए हैं और अल्लाह ज़रूर उनको इस (के बुरे परिणाम) से आगाह करेगा जो (सनअतें) वे बनाया करते थे।

स्पष्टीकरण : इस आयत में अल्लाह तआला ने उस (मीसाक़) अहद का वर्णन फ़रमाया है जो बनी इस्राईल की तरह उन से भी लिया गया था। इस मीसाक़ का वर्णन सूर: अल् बक़रा में है।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۟ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ

(सूर: नंबर 2 आयत नंबर : 84)

अनुवाद : और जब हमने बनी इस्राईल का मीसाक़ (उन से) लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और माता पिता से एहसान का सुलूक करोगे और क़रीबी रिश्तेदारों से और यतीमों से और मिस्कीनों से भी। और लोगों से नेक बात कहा करो और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो। इस के बावजूद तुम में से कुछ के सिवा तुम सब (इस अहद से) फिर गए। और तुम एराज़ करने वाले थे।

बनी इस्राईल से जो अहद लिए गए थे तौराएत में इसका वर्णन आया है। ख़ुदा तआला ने मूसा को कहा कि

(1) "मेरे हुज़ूर तो ग़ैर माबूदों को न मानना। तो अपने लिए कोई तराशी हुई मूर्त न बनाना। न किसी चीज़ की सूरत बनाना। जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर या ज़मीन के नीचे पानी में है। तो उनके आगे सजदा न करना न उन्नकी इबादत करना। क्योंकि मैं ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा ग़यूर ख़ुदा हूँ।"

(तौरात, ख़रूज, बाब 20 आयत 3)

(2) ईसा मसीह (ईसा इब्ने मरियम) ने कहा कि "और हमेशा की ज़िंदगी यह है कि वे तुझ ख़ुदा-ए-वाहिद और बरहक़ को और ईसा मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें।" (इंजील, यूहन्ना, बाब 17 आयत 3)

(3) "यह न समझो कि मैं तौरात या नबियों की किताबों को मंसूख़ करने आया हूँ। मंसूख़ करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ।"

(इंजील, मति, बाब आयत 17)

(4) पोलस ने कहा : वह शरीयत (तौरात) जिसके बारे में मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं उसे मंसूख़ करने आया हूँ। मंसूख़ करने नहीं पूरा करने आया हूँ पोलस ने उसे लानत कहा : "मसीह जो हमारे लिए लानती बना उस ने हमें मोल लेकर शरीयत की लानत से छुड़ाया क्योंकि लिखा है कि जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया वह लानती है।"

(इंजील मुक़द्दस अर्थात हमारे ख़ुदावंद और मुंजी ईसा मसीह का नया अहदनामा, गलीतो, बाब 3)

ख़ुदा ने ईसाईयों से हज़रत-ए-मूसा और हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के माध्यम से यह अह्द (मीसाक़) लिया था कि ख़ुदाए वाहिद पर ईमान लाओ और इस की ही इबादत करो परन्तु उन्होंने इस अह्द को तोड़ दिया। जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में वर्णित है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

(सूर: अल् मायदा, सूर: नंबर 5 आयत : 73)

अनुवाद: निसंदेह कुफ़्र किया उन लोगों ने जिन्हों ने कहा कि अल्लाह ही मसीह इब्न-ए-मर्यम है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ

(सूर: अल् मायदा, सूर: नंबर 5 आयत : 74)

अनुवाद निसंदेह कुफ़्र किया उन लोगों ने (भी) जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन में से एक है।

इस अह्द को तोड़ने से दो नतीजे बरामद हुए (1) बनीइस्राईल (यहूद) जो मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत के अनुसार ख़ुदा ए वाहिद पर ईमान रखते थे और उसी की इबादत करते हैं इस मज़हबी अक़ीदा के इख़तेलाफ़ की वजह से नसारा के मुख़ालिफ़ हो गए। और दूसरा नतीजा यह निकला कि नसारा के फ़िर्क़ों के मध्य भी बाहम शदीद इख़तेलाफ़ात पैदा हो गए। क़ुरआन-ए-मजीद की वर्णित आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जो कुछ वे करते थे अल्लाह इस पर उन्हें जल्द आगाह करेगा।

वर्णित आयत का विषय साफ़ और वाज़िह है और इस पर किसी किस्म के आरोप की गुंजाइश नहीं।

आरोप नंबर : 2 (y)

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ

(सूर: अल् इमरान, सूर: नंबर 3 आयत नंबर : 152)

अनुवाद हम ज़रूर उन लोगों के दिलों में रोब डाल देंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया क्योंकि उन्होंने अल्लाह का शरीक ठहराया उसको जिसके बारे में उसने कोई भी दलील नाज़िल नहीं की। और उनका ठिकाना आग है और ज़ालिमों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

स्पष्टीकरण : इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जो लोग मुनकिर हैं उन्होंने इस चीज़ को अल्लाह का शरीक बना लिया है। जिसके शरीक बनाने के बारे में उनके पास कोई दलील ही नहीं और उन झूठे शरीक बनाने वालों के दिलों में हम रौब डाल देंगे और इस कारण से उनका ठिकाना आग है और ज़ालिमों का ठिकाना क्या ही बुरा होता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ की थी

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ (सूर: : इब्राहीम, नंबर : 14 आयत नंबर 34)

अनुवाद : और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे रब इस शहर को अमन की जगह बना दे और मुझे और मेरे बेटों को इस बात से बचा कि हम बुतों की इबादत करें।

ख़ाना काअबा एक ख़ुदा की तौहीद के ऐलान का घर था उसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने बनवाया था परन्तु किसी शैतानी वस्वसे से मक्का वालों ने ख़ाना काअबा में बुत रखने का आग़ाज़ किया अंतत: संख्या 360 तक पहुंच गई इन बुतों की इबादत की जाती और उनसे सहायता मांगी जाती हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब अल्लाह तआला ने मुक़ाम-ए-नबुव्वत पर निर्धारित किया तो आपने अल्लाह तआला के इस ऐलान को मक्का वालों के सामने पेश किया।

قل هو الله احد तू कह दे कि अल्लाह एक है لاالٰہ اِلاالله س सिवाए अल्लाह के कोई माबूद नहीं ये बुत न तो तुम्हारी दुआएं सुनते हैं और न ही तुम्हें नफ़ा पहुंचाने या नुक़्सान पहुंचाने पर क़ुदरत रखते हैं इस बारे में अल्लाह ने फ़रमाया :

اِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ۭ ضَعُفَ الطَّالِبُ

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 5 May 2022 Issue No.15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

وَالْمَطْلُوْبُ ○ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○

(सूर: अल्हज, सूर: नंबर 22 आयत नंबर 74,75)

अनुवाद निसंदेह वे लोग जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो कदापि एक मक्खी भी नहीं बना सकेंगे चाहे वे इसके लिए इकट्ठे हो जाएं और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे इस को इस से छुड़ा नहीं सकते। क्या ही बेबस है (फ़ैज़ का) मांगने वाला और वे जिससे (फ़ैज़) तलब किया जाता है। उन्होंने अल्लाह की वैसी क़दर नहीं की जैसा उस की क़दर का हक़ था। निसंदेह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है।

तेरह वर्ष तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में और इसके बाद मदीना में जाकर ख़ुदा ए वाहिद की इबादत की तरफ़ बुलाते रहे और उसके उत्तर में मक्का के कुफ़्फ़ार और अरब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रचण्ड विरोध करते रहे। और असंख्य जंगों के माध्यम से आपको और आपके अक़ीदे को असफल बनाने की कोशिश करते रहे।

मक्का विजय के बाद जब सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के कुफ़्फ़ार के लिए आम माफ़ी का ऐलान कर दिया तो उन में से बहुत से लोगों के दिलों में अल्लाह तआला ने एक रौब डाल दिया। जिस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उसके सहाबा को ये लोग कमज़ोर समझते थे और जिस अल्लाह की तरफ़ वे बुलाते थे उसे उपहास और तिरस्कार की नज़र से देखते थे फ़तह मक्का के अवसार पर वही लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से भयभीत और ख़ौफ़ज़दा नज़र आ रहे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके सामने एक महान ऐलान फ़रमाया لاتثريب عليكم اليوم وانتم الطلقاء तुम पर कोई सरज़निश नहीं की जाएगी और तुम सब आज़ाद हो इस अतुल्य वाक़िया ने कुफ़्फ़ारे मक्का के दिलों में एक रोब डाला और वे यह सोचने लगे कि हम तो 360 बुतों की पूजा करते थे और उन से मदद चाहते थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते थे कि उनकी इबादत फ़ुज़ूल और बेफ़ाइदा है ख़ुदा ए वाहिद ला शरीक की इबादत करो लेकिन हमने उसकी नसीहत को नहीं माना और बदस्तूर अपने बुतों की इबादत करते रहे और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा ए वाहिद की इबादत करते रहे हम अपने माबूदों से फ़तह की दुआएं मांगते रहे वे अपने अल्लाह से दुआएं मांगता रहा आख़िर नतीजा यह कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह ने उसकी दुआ को सुना और उसको फ़तह और हम पर ग़लबा से हमकिनार किया और हमारे बुतों ने हमारी कोई सहायता नहीं की न हमारी कोई दुआ सुनी हम पराजय और अपमानित हुए और इस से यह साबित हुआ कि अल्लाह वाहिद ला शरीक ही इबादत के योग्य है। बुतों की इबादत से हमें कुछ भी लाभ नहीं हुआ। ये रोब था जो अल्लाह तआला ने उनके दिलों में डाला और इस आयत का वर्णन मुख़्तलिफ़ अवसरों पर हुआ और यहां भी इस का वर्णन किया गया। आयत का मज़मून वाज़िह और सरीह है किसी भी समझदार इन्सान के नज़दीक इस पर कोई आरोप वारिद नहीं होता।

अंतिम शब्द (समापनीय)

सय्यद वसीम रिज़वी साहिब के समस्त आरोपों के उत्तर लिख कर दिए गए। इस आशा के साथ कि वे इनका ध्यान पूर्ण अध्यन करेंगे। अगर कोई बात स्पष्टीकरण के योग्य हो तो लिख दें। उस का उत्तर भी लिख कर दिया जाएगा। इंशाअल्लाह तआला। अन्तं में पुन: तहरीर है कि सय्यद वसीम रिज़वी साहिब ने इंडियन सुप्रीम कोर्ट में क़ुरआन-ए-मजीद की आयात हटाने के बारे में अर्ज़ी दी है वे तनिक ये बताएं कि क्या वे समस्त ज़मीन पर बसने वाले करोड़ों मुस्लमानों के हुफ़्फ़ाज़ और क़ारी साहिबान के सीनों से भी वर्णित आयात के हज़्फ़ की भी मांग करेंगे। यदि वे यह मांग करें तो यह प्रले दर्जे की जहालत होगी। अत: अगर ये नामुमकिन है तो फिर उस मुतालिबे का उद्देश्य इसके इलावा और क्या हो सकता है कि करोड़ों मुस्लमानों की भावनाओं को ठेस दे कर के उनको जोश दिलाने का दुस्साहस किया है।

याद रखें क़ुरआन-ए-मजीद की कोई आयत दहश्तगर्दी और उपद्रव को कदापि बढ़ावा नहीं देती जबकि आपका आयात हटाने की मांग कुछ लोगों में दहश्तगर्दी के जरासीम पैदा करने का कारण बन सकती है।

इस लिए निवेदन कर्ता को इस से गुरेज़ करना चाहिए कि देश और क़ौम की सलामती और ख़ैर इसी में है कि आपसी प्रेम को बढ़ावा दिया जाए अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमारे देश को हर लिहाज़ से सलामत रखे और ख़ुशहाली का गहवारा बनाए।

وَ مَا عَلَيْنَا اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ

(सूर: यासीन, सूर: नंबर 36 आयत 18)

अनुवाद : और हम पर खोल खोल कर बात पहुंचाने के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं। ★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

था, इस लिए यदि इस रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया जाए जिस पर क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल हुआ तो अल्लाह तआला की आदत से समानता रखने वाली सिफ़त के अधीन उन लोगों को जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण की वजह से दुनिया से अलैहदगी इख़तियार करते हैं और दुनिया में रहते हुए भी इस से ताल्लुक़ात नहीं रखते, खाने पीने और सोने में कमी करते हैं, बेहूदा गोई इत्यादि से परहेज़ करते हैं, अल्लाह तआला अपने इल्हाम से नवाज़ता और उन पर सच्चे स्वप्न और कशूफ़-ए-सहीहा का दरवाज़ा खोल देता है और परोक्ष की बातों से अवगत करता है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अस्सलाम का भी एक इल्हाम हैं कि :

फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई

इस में भी वही आदत वाली बात वर्णन की गई है। ख़ुदा तआला ने एक दफ़ा बहार में अपनी रहमत की शान दिखाया था इस लिए जब फिर मौसम-ए-बहार आता है तो अल्लाह तआला की रहमत कहती है कि अब के मेरे बंदे क्या कहेंगे इस लिए हम फिर अपनी शान दिखाते हैं। और यदि बंदे इस से फ़ायदा उठाएं तो अगली बहार में फिर वही इनाम नाज़िल होता है उद्देश्य कलाम-ए-इलाही को यदि वृक्ष तसव्वुर कर लिया जाए तो जो सिफ़त-ए-इलाही आदत के समान है वह हर रमज़ान में उसे झिंझोड़ती है और इस से मोमिनों को ताज़ा बताज़ा फल हासिल होते हैं।

फिर रोज़ों से इस ज़ंग में भी रूहानियत तरक़्क़ी करती है कि जब इन्सान ख़ुदा तआला के लिए खाना पीना तर्क करता है तो उसके अर्थ ये होते हैं कि वे ख़ुदा तआला के लिए उस की राह में मरने को तैयार है। और जब वे अपनी बीवी से विशेष सम्बन्ध खत्म करता है तो इस बात पर आमादगी का प्रकटन करता है कि वह ख़ुदा तआला के लिए अपनी नसल को भी क़ुर्बान कर देने के लिए तैयार है और जब वे रोज़ों में इन दोनों प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत कर देता है तो वे ख़ुदा तआला की प्रेम का अधिकारी हो जाता है और ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ क़ायम होने और रूहानियत के मज़बूत हो जाने की वजह से वह व्यक्ति हमेशा के लिए गुमराही से सुरक्षित हो जाता है।

(तफ़सीर-ए कबीर भाग 2 पृष्ठ 379 ऐडीशन 2010 ई. क़ादियान)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
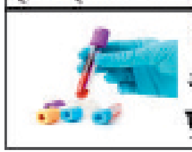
चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad